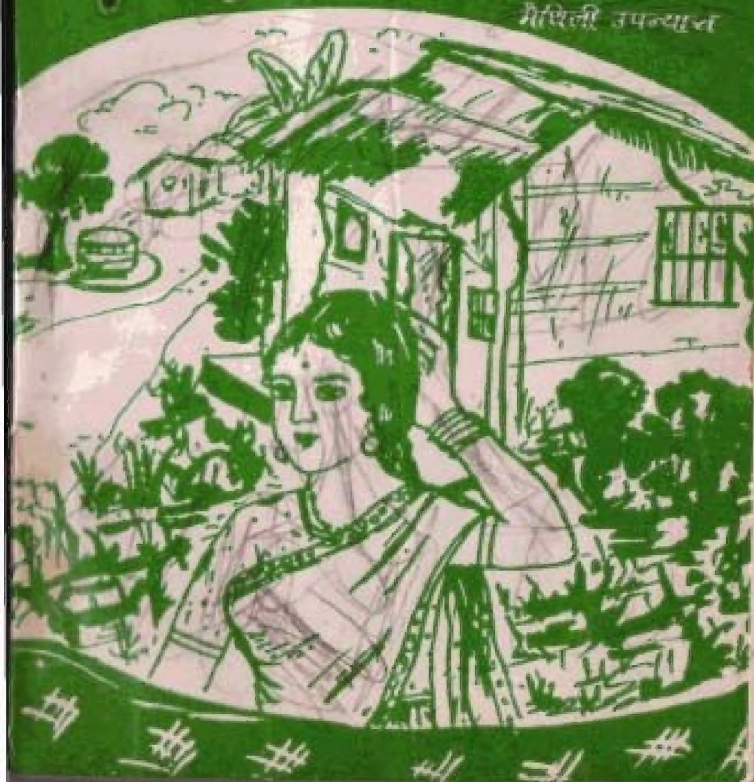


मुंशी रासबिहारी लाल दास कृत

सुमति

मैथिली उपन्यास



मुंशी रासबिहारी लाल दास कृत उपन्यास

सुमति

दीपिका लोकार्पण दूरीत भाग्य संसार
जगत्सु नर देहा जगत् ।
जगत्सु कुल लोकार्पण
12.11.96

chmch di

सम्पादक

डा० रमानन्द झा 'रमण'

लोकार्पण

डा० रमानन्द झा 'रमण'

उवंशी प्रकाशन

पटना-६

मुमति (मैथिली उपन्यास) मुंशी रासबिहारी लाल दास

सं० डा० रमानन्द झा 'रमान'

Sumati (Maithili Novel)--Munshi Ras Bihari Lal Das

Ed. by Dr. Ramanand Jha 'Raman'

प्रथम संस्करण-१९१८

द्वितीय संस्करण-१९६६

प्रति-५००

मूल्य-१० रुपैया

प्रकाशक

उर्वशी प्रकाशन

मुसल्लहपुर,

पटना-८०० ००६

मुद्रक

पूर्णमा प्रिंटर्स

मुसल्लहपुर,

पटना-८०० ००६

‘मुमति’—मैथिली साहित्यिक रत्न

—प्रो० श्री जानन्द मिश्र

मैथिली उपन्यासक विकास-नाचा एहि शताब्दीक प्रथम दशक सँ प्रारम्भ होइछ । यद्यपि प्रारम्भमे एहि विधाक रूपरेखा ओतेक स्पष्ट नहि छल तँ प्रारम्भिक लेखक लोकनि उपन्यासमे कथा एवं वर्णन-विन्यास दिस बेसी ध्यान देल । वर्णनमे अनिर्णयताक नाचा विशेष रहल । किन्तु अगले लेखक लोकनि अपन ध्यान सामाजिक कुटीरित दिस देल तथा ओकर निराकरणक दिशामे अपन लेखनीकेँ अप्रसारित कएल । बाबू तुलापति सिंह, श्रीकृष्ण ठाकुर, पं० जगदीश झा ‘जनसीदन’, पं० जीवल मिश्र, रास बिहारी लाल दास आदि मैथिलीक प्रारम्भिक उपन्यासकार लोकनि अपन लेखनी सँ मिथिलाक विभिन्न सामाजिक समस्याकेँ उजागर कएल । ओ रचना सभ प्रकाशमे आएल किन्तु ओकर उचित मूल्यांकन ताहि समयमे नहि भए सकल । ताहि दिन भाषाक एहेन रचना दिस प्रबुद्ध पाठक लोकनिक ध्यान ताहि रूपेँ नहि पड़ल । फलतः ओ रचना सभ विस्मृतिक गर्तमे चल गेल । बाबू जगन्नाथ मैथिलीक पाठक ओहि रचनाक विषयमे किछु जानए बाहेत छवि तँ पोथीक अनुपलब्धता वढ़का बाधक बनि जाइत छैन्हि । एही उद्देश्येँ मैथिलीक ओहेन-ओहेन रचनाक पुनर्प्रकाशनक डा० रमानन्द झा ‘रमान’क प्रयास परम स्ताध्य अछि तथा श्रीही कर्कीक ई प्रकाशन ‘मुमति’ एक अंग बिक ।

रास बिहारी लाल दासक ‘मुमति’ जाहि समय वर्षात् १९१८ ई० मे प्रकाशित भेल छल ताहि दिनुक समाजमे मिथ्यादम्बरक पाछाँ लोक अपन सर्वस्व नष्ट कए लैत छल । नविध्यक विपु चिन्ता कएने विवाह आदिक अवसर पर उचित सँ बहुत बेसी खर्च कए देत छल जाहिसँ ओकर जीवन-साधन अत्यन्त दुःखमय भए जाइत छलैक तथापि ओहेन कार्यकेँ छोड़ब ओकरा

कठिन बुझावत छलैक । एहने वैवाहिक अवसर पर मिथ्यादम्बरक कारणे' दुःख भोजैत एक कर्ण कायस्थ परिवारक कथा थिअ 'सुमति' ।

रास बिहारी लाल दास स्कुली शिक्षा बड़ पोड़ पओने छलाह, किन्तु स्वाध्यायक बने' तथा तीव्र पत्रविशेष शक्ति सँ समन्वित रहला सँ सुन्दर ढंग सँ तत्कालीन मैथिल कर्ण कायस्थ लोकनिक समस्या एवं स्थितिक आल-कारिक भाषा मे चित्रण कएल अछि । उरस्थान्छीकता रहितहुँ अपन जगदेवता सिद्ध करवाने पूर्ण सफल भेल अछि ।

एहि उपन्यासक अनुपपत्त्युत्पादक कारणे' डा० श्री जयकान्त चावुक इतिहासमे अतबा सामग्री देल तकरहि पश्चातक इतिहासकार लोकनि दोहरवैत गेलाह । केओ ओहि बोधीकेँ देखि ओकर पुनर्मु'स्वीकन करबाक कष्ट गहि कएल । डा० श्री 'रमण' एकरा फेरि प्रकाशमे आनि एकर मूल्यांकनक अवसर मैथिलीक पाठककेँ देल अछि जाहि हेतु ओ अवगतादाह' छथि । एहि रचनाक प्रकाशनसँ मैथिली उपन्यासक संग तत्कालीन मैथिली गद्य-लेखी पर सेहो महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ैछ तथा गद्यरूक अध्येता लोकनिकेँ भाषा सम्बन्धी किछु तर्जीब तथा भ्रैर्यन्हि से आशा अछि ।

अन्तमे डा० श्री रमानन्द झा 'रमण'केँ हम आशीर्वाद ईत छिएन्हि जे एहिना प्रतिपद्धिमे मैथिलीक भण्डार सँ नुकाएल, हेराएल रत्नसभकेँ ताकि-ताकि प्रकाशमे आनि मैथिली पाठकक उपकार करथि ।

पटना प्रायतन आचार्य एवं विनायाज्यस
स्वतन्त्रता दिवस, १९६९ ई० मैथिली विभाग
पटना विद्याविशाल, पटना
पटना

रासबिहारी लाल दासक अवदान

रासबिहारी लाल दासक जन्म मधुबनी जिलाक भण्डी गाममे १८८२ई०क लगपासमे भेलनि । हिनक पिताक नाम छल दुलार सिंह दास । हिनक पितामहक नाम मन्गाराम, प्रपितामह जीवनलाल दास तथा अतिबृद्ध पितामह कृष्णरत्न दास छल । हिनक विवाह मुर्तजापुर छलनि । हिनक पुत्रक नाम छल बजरंग बिहारी दास । रासबिहारी लाल दासक मूल थिक सोनार सप्ता बेरा ।

रासबिहारी लाल दास विभिन्न पढ़न-लिखल गहि छलाह । प्रवेशिका धरि शिक्षा पओने छलाह । आजीवनिका केल ओ यद्यपि रेलवेमे डीकेदारी करैत छलाह, परञ्च हुनक हृदय एक सर्वेदनशील रचनाकारक हृदय छल । हुनक जेही समय शास्त्र-पुराणक अध्ययन-गहन तथा साहित्य साधनामे व्यतीत होइत छल ।

रासबिहारी लाल दासक बूढा कृति प्रकाशित अछि । ओ थिक 'मिथिला वर्ण' (१९१४ ई०) तथा 'सुमति' (१९१८ ई०) । 'मिथिला वर्ण' हिन्दीमे अछि । एकर दू भाग अछि । प्रथम भागमे मिथिलाक प्रकृति, जीव, जंगल आदिक विस्तृत वर्णन अछि । दोसर भागमे मैथिल कर्ण कायस्थक वर्णनक संगे कायस्थक उत्पत्ति, चित्रपुस्तकीक बादहो सत्तासंक, विवाह हुनक मूलवास तथा मूलवास सँ कृतप-कृत्य प्रस्थान कएल तकर वर्णन अछि । एकर अति-रिक्त कर्ण कायस्थक अन्तुदयक संगहि पंजी प्रयास अनुसार २७० बंशक पूर्ण चित्रण देने छथि ।

मिथिला मिहिर २६ जनवरी १९१९ ई०क अंकमे 'मिथिला वर्ण'क प्रकाशनक सूचना एहि प्रकारे' अछि—'मिथिला का प्राचीन तथा आधुनिक इतिहास, भूगोल तथा अन्त्यान्त्य विषयों को प्रदर्शित करनेवाला २७५ पृष्ठों का यह ग्रंथ छप गया है ।'

‘सुमतिक’ प्रकाशन १९१८ ई० में भेल। ई पोथी महाराज रमेश्वर सिंहके समर्पित अछि। एकर मूल्य अछि ६० आना। पुस्तक प्राक्तिक स्थान में लिखल अछि—श्री रामलाल तथा श्री गिरिधारी लाल दास, मिथिला दर्पण कार्यालय—मो० मधो, पो० मधुबनी, जिला दरभंगा। ‘मिथिला मोद’ उद्गार १४८-४९ वर्ष १९१९ ई० में ‘सुमतिक’क समालोचना निम्न प्रकारे अछि—‘भक्षी राम निवासी मुन्शी श्री रास बिहारी लाल दास रचित एक सामाजिक ‘सुमति’ नामक उपन्यास प्रस्तुत भेल अछि। ई उपन्यास देखै योग्य अछि। एक-दू पृष्ठ देखलासँ चित्तमें ततेक अहसास बूझै जे स्थान, भोजन, सब काज स्थिति समस्त पुस्तक पढ़ि जाइ। ‘सुमति’में विवाहक सिद्धान्तक बरिआतक विशेष कौतुकनुक्त कथा अछि।

सहस्रोत्तम दासक पुत्रक विवाह मनोरथ लाल दासक कन्या सँ भेलन्हि ताहिमें सहस्रोत्तम दास ओ मनोरथ लाल दास दूनु समाधि मनोरथपूर्ण बरिआत सजि-अजि विवाह करीलन्हि, जेमुक देवाक सँ कथे नहि हो। विवाहक शोभा बहुत भेल। तत्काल दूनु समाधिके मधो पूर्ण भेलन्हि। किन्तु पश्चात् एही विवाहक शृंगार दैत-दैत सर्वस्वान्त भेलन्हि। आहि घर कन्याक पिताहमे अनेको सहस्र टाका नाच-तमासमें उड़ि गेल, ताही घर कन्याके अन्नो वस्त्र भेटव कठिन भइ गेल।

रास बिहारी लाल दासक बाल्यकाल घरि देशमें समाज सुधारक आन्दोलन चरमोत्कर्ष धरि पहुँचि गेल छल। दोसर दिन राष्ट्रीय स्वाधीनताक आगि कमका जेज भए रहल छलक। मुबारकादी आन्दोलन तथा राष्ट्रीय चेतनाक घाह सँ मिथिलापत्तरी अजगन्तक नहि रहल। ओही सुधारवादी आन्दोलनक परिणाम भेल ‘अखिल भारतीय वैजित महासभा’। समाजमें व्याप्त वैवाहिक कुरीतिक-निराकरणक उपायक चर्चा महत्त्वपूर्ण नियमित कथे होइत छल। साहित्यमें विचार परिवर्तन करैवाक कतेक क्षमता छैक ओहि तत्त्व सँ प्रबुद्धन सँ अपरिचित नहि छलाह। प्रो० गंगापति सिंह (१८६४-१९६६) साहित्यक एहि प्रयोजनक प्रसंग लिखल अछि—‘नाटक, उपन्यास

आदि सरस विषय रहने ओहिसे मनोरंजन सेहो होएतन्हि आओर अनेक प्रकारक उपदेशो प्राप्त होएतन्हि। बीस-बीस पच्चीस-पच्चीस विवाह कए जातिके कलकित कएगिहार बिक्रीवा लोकनिक अन्तमें जेहुन पाप-परिणाम होइ छैन, से प्रत्यक्ष देखलन्हि छी। किन्तु, यदि एहि विषय पर सरस तथा मनोरंजक नाटक वा उपन्यास कोनो विद्वान लिखथि तँ ओहि सँ समाजक बहु उपकार भए सकैत अछि। तबन लोक एहन-एहन दुष्कर्म करवाक साहस नहि करत।’ (‘मिथिला मिहिर’ १५ नवम्बर, १९१४ ई०)। मुंशी रासबिहारी लाल दासमें सामाजिक चेतना पर्याप्त छल। वैवाहिक कुरीतिक दुष्परिणाम सँ बूझ पक्षकेँ उपदेष्ट देखि व्यथित भेल होएताह। जकर नाय-बापक विवाहमें अनेक खर्च भेल छल, तकरहि सन्तानकेँ खिलटि जाइत देखने होएताह। समाजक ई स्थिति एक संवेदनशील व्यक्तिके निश्चित रूपेँ प्रेरित करवा नेल पर्याप्त अछि।

मुंशीजीक समक्ष एकटा व्यापक सामाजिक विषय-वस्तु छल। ओकरा ओ समाजक समक्ष प्रस्तुत करब चाहैत छलाह। हुनका साहित्यक विभिन्न विधाक सामर्थ्य आ सीमाक ज्ञान छलनि। उपन्यासक जब ओ से नहि मानैत छलाह, जे बाबू तुलापति सिंह ‘मदनराज चरित उपन्यास’ सँ गुप्त छलाह। अपन अनुभवक अनिश्चिति नेल उपन्यास विधाकेँ स्वीकार करवाक प्रसंग लिखने छथि—‘नय मण्डलसभ नक्षत्रादिक दर्शन तँ सहजमें वक्षुपातहि सँ भइ सकैत अछि, परन्तु भू-मण्डल समाजकात्मक चरित्रकपी नक्षत्रक निरीक्षण तँ उपन्यासकपी आधुनातमीक (चरमाक) अवलम्बन सँ समाजगत गुप्त प्रकट धार्मिक-सांस्कृतिक चरित्रकपी नक्षत्र सूक्ष्म जागत तँ कहि सकैत छी जे समाजकपी कोनोसामय रोकई, समाजकपी फोटो कमराक जैसे, समाजगत चरित्रक चित्राधार अर्थात् अवलम्ब, समाज सुधार तथा चरित्र मठनक आवश्यक तथा आधार उपन्यासक थिक। अतएव, सामाजिक उपन्यासक कठन सँ मनुष्य सहजमें अपन दूषित चरित्रकेँ सुविचार सँ परित्याग कए सकैत अछि।’ उपन्यास की थिक, वा उपन्यासक कतेक महत्व अछि मुंशी रास बिहारी लाल दासक एहि विचार सँ स्पष्ट अछि।

मैथिलीक तीनू आरम्भिक उपन्यासकार जीवल मिश्र (१८६४-१९२३), जनार्दन झा 'जनसीदन' (१८७२-१९४१) तथा मुंशो राम बिहारी लाल दास (१८८२-) मे एक विलक्षण साम्य अछि, जे तीनू नोटे पहिने हिन्दीमे लिखि स्वाति अजित कएने छलाह । ई सर्वविदित अछि जे मैथिलीक विरुद्ध चलल बद्यन्त्र सँ परिचित भेला पर जीवलमिश्र हिन्दीमे नहि लिखबाक शपथ लेल । राम बिहारी लाल दासक पहिल पोथी 'मिथिला दर्पण' हिन्दीमे प्रकाशित भेलो पर मातृभाषा दिस हुनक ध्यान गेलनि । ओ ई अनुभव कएल जे सभ उन्नतिक मूल मातृभाषाक उन्नतिए पिक । जीवल मिश्रक उपन्यास 'रामेश्वर' (१९१६ ई०), जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'निर्दयी सासु' (मि० मि० १९१४ ई० तथा पुस्तकाकार १९८४ ई०) एवं राम बिहारी लाल दासक 'सुमति' [१९१८ ई०] मे 'निर्दयीसासु' तथा 'सुमति' वैवाहिक समस्या पर अछि । 'रामेश्वर'क समस्या भ्रूख, अभाव, गरीबी अष्टाचार एवं मानवीय कष्टकाक अछि । प्रथम दू उपन्यासक अपेक्षे 'सुमति'क कलेवर पैघ अछि तथा पात्रमे विविधता छैक । किन्तु, निबन्ध शैलीक भाषा तथा पैघ-पैघ वाक्य संरचनाक कारणे 'सुमति'क शिल्प आ भाषामे ओतेक सहजता नहि अछि, जतेक 'निर्दयी सासु' वा 'रामेश्वर'मे पाठक अनुभव करैत अछि ।

'निर्दयी सासु' तथा 'सुमति' वनू स्त्री प्रधान रचना थिक । परंच निर्दयी सासु'मे जतय पुरुष पात्रक व्यक्तित्व अत्यन्त गौण अछि, 'सुमति'मे ओ स्थिति नहि छैक । 'निर्दयी सासु'क यशोदा मृक अछि । बिना एको शब्द बजने सभ किछु सहैत जाइत अछि । परंच 'सुमति'क सुमतिमे नामगुण पूर्णतः चरितार्थ भेल अछि । सासुरवासमे पूर्वहि सुमति सुशिक्षिता भए जाइत अछि । सासुर गेलापर आश्रमक पूर्ण प्रबन्ध अपना हाथमे लए पतिक उधार कएलाक बाव ममाजक उधार हेतु सक्रिय भए जाइत । अतः रचनाक सोह-स्थता जतेक प्रसार आ स्पष्ट रूपमे 'सुमति'मे व्यक्त भेल अछि, से स्पष्टता 'रामेश्वर' आ 'निर्दयी सासु'मे नहि अछि । 'सुमति'मे उपन्यासकार एक पात्र उचितवृत्ताकै अनने छथि जे बीच-बीचमे टीपैत जाइत अछि ।

डॉ० जयकान्त मिश्र अपन इतिहासक श्रवणे 'सुमतिक' चर्चा आ विस्लेषण कएने छथि । बादक पीढ़ीक इतिहासकार लेल 'सुमति' विषयक ज्ञानक ओएह माध्यम आधार भेलैक । पोथी पढ़ि लिखबाक अवसर प्रायः पोथीक प्रमुपलब्धताक कारणे नहि भेलैक । प्रो० राधाकृष्ण चौधरी (१९२४-८४) ए सर्वे ओं मैथिली लिटरेचर'मे 'सुमति'क उल्लेख अवश्य कएने छथि । मुदा समेत अछि मूल पोथी बिना पढ़ने-से मात्र एक उदाहरण सँ स्पष्ट भए जायत । सुमति थिकनि मनोरथ लाभक कन्ता आ सहलोला बाबूक पुत्रवधु । मुदा डॉ० मिश्रक इतिहासमे मुख्य-बोधे सुमति भए गेलीह सहलोला बाबूक बेटी आ मनोरथ लाभक पुत्रहु । एहि अशुद्धिके दोहरावत प्रो० राधाकृष्ण चौधरी लिखल—“When the heroine Sumati daughter in law of Manojath labh arrives, she manages things so well that the fortune of the family takes a better turn.” कहवाक तात्पर्य जे मैथिलीक अन्ये आरम्भिक उपन्यास जकां 'सुमति' सेहो पढ़ल नहि गेल अछि । चर्चाक आ विस्लेषणक स्थिति तँ बादमे अबैत अछि ।

हमरा एहि बातक प्रसन्नता अछि जे मैथिलीक चारि गोटा आरम्भिक उपन्यास 'रामेश्वर' (१९१६—जीवल मिश्र), 'निर्दयी सासु' एवं 'पुनर्विवाह' (१९१४ आ १९२४—जनसीदनजी), तथा 'सुमति' (१९१८)केँ संक्षेपसँ ताकि जनबामे सफल भेलहुँ । ओहि प्रसंग समय-समय पर लिखि साहित्यानुसारी मैथिलिक ध्यान आकृष्ट कएल । अनुपलब्धकेँ गुलम करैबामे सफलता भेटल चाहितँ मैथिली भाषा आ साहित्यक अक्षय पसरल कतेको आन्तिक निराकरण संभव भेल अछि । ई उपन्यासकार लोकनि अथवा एहि वर्गक अन्ये साहित्यकार मैथिलीक साहित्यिक परिवारक बरेष्य एवं प्राज्ञः स्मरणीय पुरस्सा थिकथि । हिनकालौकनिक साहित्यिक अवदानसँ प्रत्येक पीढ़ीक माथ उठल रहैत । मुदा अपन पारिवारिक जीवनक असफलता सँ कुण्ठित किछु एहनो लोक हमरा लोकनिक बीच छथि जिनका अपन बाप-पितामह अथवा पुरस्सा लौकनिक अवदानक चर्चे पर जड़नी लागि जाइत छथि । अनोचित होइत

स्वराज्य के ताकि अन्तर्गत एहन कोनो रूपराय हुनका निरर्थक जगत छनि तथा विविधन प्रतिपादनमे दुष्ट कुटिल कालोचनका रंध भेटैत छनि । सोहन कुटिल आ कुटिल व्यक्ति के राख बिहाही आब दासक अमूल्य कति 'सुमनिक' पुनः मुद्रणमे जे जाचा भतिजाबाद केर तौ स्थापित होइत अनुभव होनि तौ हम अपन भाषा निरर्थक धरत ।

‘सुमनिक’ सम्पादनक क्रममे तबस्य पहिले सोन पहुँच स्थिति स्व० काञ्ची नाथ झा ‘किरण’ (१९०६-१९०९) जे पोथी मुलभ कए राम बिहारी नाथ दासक प्रयोग लिखल लेल प्रेरित कएल । कतेको अन्य योजना जकाँ एहू काजमे पण्डित श्री गोविन्द झा, प्रो० श्री आनन्द मिश्र तथा डॉ० श्री गोकुल नाथ झाक वैचारिक सहयोग भेटल अछि । मन्त्री श्रीनारी कल्पना झा पूर्वहिम कतेको प्रकाशन जकाँ ‘सुमनिक’ प्रेस काफी तैयार कए सहयोग कएल । श्री राजनन्दन साह दास (कर्मभूत, कलकत्ता) एवं श्री जगदानन्द साह दास संचालक जगुरानन्द स्मारक पुस्तकालय, भन्जी मुन्शीजीक पारिवारिक परिवारक भूचना देल । एहि सब व्यक्तिगत इति हम जेन द्वारिक आभार प्रकट करैत छी ।

अन्तमे द्वय भस्मी गामना माटिक प्रति अपन नमन अपित करैत छौं जे मुँजी रास बिहारी सास दासक अतिरिक्त कालीकुमार दास (१९०२-४६) मृणाल लाल दास आ हरितमदन ठाकुर 'सरोज' (१९०६-४५) सन साहित्य-कारकेँ जन्म देखल जाहि में मैथिली साहित्यक ओम्बुडि मेनेक जड़ि । मुदा सबसँ बेसी ग्रन्थदायक पाम छनि उन्वैसी प्रकाशनेक अधिष्ठाता श्री गोपीकांत झा जे मिथिलाक माटि-पानिक बीज-वस्तुकेँ प्रकाशमे आनि अपन साहित्यिक आ सांस्कृतिक प्ररोह सँ आबुक लोककेँ परिचित करैबा सेव फाँड़ बान्हि तत्पर छथि ।

कोशांगरा डा० रमानन्द झा 'रमण'
१८-१०-६४

समर्पण

प्रणवपाल गुणवार धार्मिक प्रवर भुसुर लण्डवला मुलाब्ज प्रभाकर मान-
नीय मन्महादजधिराज मिथिलेला श्री १०० श्रीमान रमेश्वर सिंह ब्रह्मचर
जी० सो० आइ० पी०, के० वी० ई०क पाणि सरोवरहमे सादर समर्पण ।

श्रीमान् ।

मैथिलचन्द्रक मोल्लिमोर मिथिलाप्रति परम पूज्य श्रीमाने थिकतु ।
अतएव, मैथिली भाषा साहित्योद्यानका एक नव विकसित तथा सुप्रसिद्ध
'सुमति' सुमन श्रीमानका कम्पनीक कर कम्पले साधर समर्पित अछि । ऐति
'सुमति'क सुयोग्य आहूत एकमात्र श्रीमाने थिकतु । अतः श्रीमानहिके
अपनीला सँ नमस्कारकेँ सुमति समस्त होयतक ।

भवदीयानुगत

रासबिहारी नाथ दास

भूमिका

हम 'मिथिला दर्पण' क भूमिकामे कइ अयलहुँ अछि जे पाठक महोदयकेँ उक्त ग्रन्थ यदि किञ्चित् कदाचित् रोचक तथा लाभदायक होयतन्हूँ तौ हम परम उत्साही भै कोनो नवीनोपहारक सहित गुणग्राही पाठकक सेवामे पुनः उपस्थित होएब । हमरा एतबो आशा नहि छल जे हमर सन अपटु अपटुक ग्रन्थकेँ कण्ठेरिपट्टु केओ अवलोकन करता किन्तु—“बड़े सनेहूँ लखन पर करहीं। गिरि निज खिरत सवा तृण धरही । जलधि अगाध मौलि बह फेनू । संतत धरणि धरत खिर रेनू ॥” येही धारणा सौ बिद्योत्साही गुणग्राही विद्या-विवेकी पाठकक सत्कार तथा महानुभाव सम्पादनक समालोचनाक चमत्कार सौ मिथिला दर्पणक हजारो प्रति समस्त भारतवर्ष, आसाम, नेपाल तथा इंग्लैंड प्रदेशमे हाबोहाब छूः उड़िआय गेल । कियेक नहि ? “धारव दारु नारि सभ स्वामी । राल सुगंध अन्तरवासी ॥” जेहि पर कृपा करहि जन जानी । कवि उर अखिर नचावहि वानी ॥” किन्तु एतेक भेलहुँ पर सखेद कहक पड़ैत अछि जे जाहि मैथिल समाजक हेतु उक्त ग्रन्थक रचना कयल गेल ताहि मैथिल समाजमे उपरोक्त ग्रन्थक आवर स्वल्पतरे भेल । इहो होएब उचिते कियेक तौ ई सत्ये जे ‘मणि माणिक मुस्ता कवि जैसी ।’ अहि गिरि गज शिर सोह न तँसी ।’ नृप किरीट तल्ली तनु पाइ । लहै सुषस शोभा अधिकाइ तँसहि सुकवि कवित बुध कइहीं । उपजहि अल अल छवि लहहीं ॥

अस्तु, हिन्दी भाषानुरागी रसिक तथा प्रेमी पाठकक प्रोत्साहन सौ हिन्दी भाषाक अन्त्या ग्रन्थ रचनाक परमाभिलाषी भेलहुँ । किन्तु मैथिली भाषाक रसिक कतिपय विबुध भिन्न महाशय अनुरोध करय लगलाहे जे निज मातृ-भाषाक उन्नतिये सभ उन्नतिक मूल होइत अछि । अतएव येहि बेर मिथिला भाषा साहित्यिक सेवन करब परमावश्यक थीक । हमरा सभक आधुनिक

सुमति

१३

सामाजिक दशा परम अधोगति भै प्राप्तिकेँ चलति अछि, तौ येहि बेर मिथिले भाषामे समाज सुधार पर कोनो एक उपन्यास रचना रचू, जाहिलेँ समाज पर प्रचुर प्रभाव पड़ैक ।

अतएव, हम हस्तगत ‘सुमति’ उपन्यास रचनाक विवेचना पर उद्यत भेलहुँ । किन्तु ने हम साहित्याचार्य, ने काव्यतीर्थ ने तर्करत्ने अर्थात् किछु नहि केवल निरक्षर भट्टाचार्य । तखन कोन योग्यताक बलें समाजक सुयोग सेवाई भै सकब । अस्तु, येही संकल्प-विकल्पक साम्राज्यमे शैरास्यताक आभास धामित होबय लागल । किन्तु येही तर्क-वितर्कक आक्रमणमे जगजननी सौ मैथिलीक अनुकम्पा सौ निरास हुबबमे किछु आशाक झाँकी दर्शनक अनुभव होइत । तत्काले स्फुरण भै जाएल जे अन्तःकाशमे खगपति तथा मखनो तौ अपन-अपन सामर्थ्यानुसारे बिचरैत छथि । तेँ हमहुँ ओही भंडाधार पर यथा-शक्ति मिथिला भाषा साहित्यकाशमे परिभ्रमणक प्रयत्न कयल अछि । नभ कण्डलस्थ नक्षत्रादिक दर्शन तौ सहजमे चक्षुपातहि सँ भै सकैत अछि परन्तु घुमण्डल समाजकाशस्थ चरित्ररूपी नक्षत्रक निरीक्षण तौ उपन्यास रूपी आइ भ्लासहीक [चरमा] अवलम्बन सौ समाजगत गुप्त प्रकट सानि-सानिक चरित्ररूपी नक्षत्र मुख्य लागत । तँ कहि सकैत छी जे समाजरूपी कोनोत्राफक रैकई, समाजरूपी कोटोकमराक लेन्स समाजगत चरित्र प्रदर्शनीक पासपोर्टे अथवा गाइड समाज चरित्रक चित्राधार अर्थात् जलबम समाज सुधार तथा चरित्र गठनक आदर्श तथा आधार उपन्यासे थीक । अतएव सासाजिक उप-न्यासक पठन सौ मनुष्य सहजमे अपन दृष्टित चरित्रकेँ सुविचार सौ परित्याग कय सकैत अछि । कोन कुकर्म वा सुकर्मक केहेन परिणाम भै सकैत अछि । तेँ यदि येहि ‘सुमति’ उपन्यासक पठन सौ विचारशील उपन्यास प्रिय तथा रसिक पाठक लाभ उठाताहूँ तथा समाजक किञ्चित् सुधार करतहूँ तौ हमर परिश्रम सार्थक होयत । इत्यलम ।

मन्त्री

ता: १. ८. १९१८ ई०

ग्रन्थकार

विशेष व्यवस्था

पाठक ! हस्तगत सुमति उपन्यास सत्यतापूर्ण सामाजिक दुर्घटनाक एक चित्राकूप थीक । उपन्यासस्थ पात्र-पात्री तथा स्थानक नामक कल्पना पर जल्पना करब आसंगत । अतएव चिन्तारशील पाठक-पाठिका सँ पठन समय मे वैदिकदासित स्थानम सँ साक्षात् भै जाइछ तौ प्रत्यक्षता सँ आकारण स्पष्ट कमपि नहि होथि अथवा उपन्यासाङ्कित घटना सँ अपन उपर परितोष नहि करथि किन्तु उपन्यासाङ्कित दुर्घटना सँ पूर्णतया परिचित भै समाज सुधारक विवेचना करथि तथा सर्वसम्मानानुसार एक बेहून नियमावली निर्माण करथि जाहि सँ अपार अप्रत्यय अनुचित विधि-व्यवहार तथा ककड़दलालीक बाढ़ि सँ भागित समाज सँ बचावथि नहि तौ 'वित-वित बदेव सवार रामधन केवह न लागय लाइ' ।

अन्वयकर्ता

सुमति

(मैथिली उपन्यास)

मं शी रासबिहारी लाल दास

जीमू

(सामान्य विभाग)

साहू लाल मिहलीसाहू मिह

प्रथम परिच्छेद

‘जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।

जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥’

आइ बैशाख सुदि पञ्चदशीक ठीकाठीक दुपहरक समय थिक । भगवान भुवन भास्करक प्रखर प्रचण्ड रश्मि सौं जर्जरीभूत रौदायल कौआसन मुँह बौने कतेक व्यक्ति मुखमण्डल तथा वक्षस्थल पर जीर्णशीर्ण तीनी सौं वायुके विकम्पित करैत तथा सुखद त्रिविध समीर सेवनार्थ येहि वृक्षक छाया, ओहि वृक्षक छाया तथा येहि दालान सौं ओहि दालान दिशि दौड़-धूप कए रहल छथि । विश्रामार्थी व्यक्तिके संतप्त करैत-करैत दिनमणियो किंचित कालान्तर मे सन्ध्या-देवीक भवनमे प्रवेश कए लगताह । सन्ध्यादेवीक भवनमे पदार्पण करितहि सुधाकर पूर्व नील नभ मण्डलक यवनिका उठाय मंद-मंद मनोहर हँसी हँसैत विकसित भेल चल अबैत छथि । सुधांशुक लालिमा देखितहि प्राची पवनो पिनपिनाय लगलाह । बोध होइत अछि जे अनुत्पित व्यक्तिक अङ्ग-प्रत्यङ्ग सौं विभाकरक अनुतापके ताकि-ताकि कय, खेहारय लागल छथि ।

ठीक ओही अवसर पर उद्धव दास पंजिकार कुमार सोनेलालक सिद्धान्त दिवसक निर्णयार्थ श्रीमान सहलोला बाबूक निज तवनिर्मित सदन पर समागत भेल छथि । जाहि स्थान पर पंजिकार प्रस्तुत छथि से स्थान परम प्रसिद्ध पर-लोकगत संचित निधिक विशाल प्रकाण्ड अट्टालिकावलोक भग्नावशिष्ट थीक । जकरा देखला सौं अहुखन धरि विदित होइत अछि जे निधि महानुभावक अध्यक्षतामे उपरोक्त स्थान अपन छवि छटाक आँगा प्रायः राजप्रसादहुक मानमर्यादके तिरस्कार करैत छल होएत । किन्तु, सम्प्रति शून्य मशान तथा अति सोचनीय भए रहल अछि । छिन्न-भिन्न भग्नावशिष्ट पर दृष्टिपात होइतहि दर्शकक सजलनयन वरवश अश्रुवारि सौं सिंचन करय लगैत छैक ।

संचित निधिक भवनक परिपालित व्यक्तिगत कुतश्च लोचनके, तौ मोतीक उप-
हार देने बिना औरो नहि रहल आइत छैक। ठाम-ठाम सङ्गल-पलल पजेवक
मोनीर, कतहु-कतहु सड़ौर, ठाम-ठाम झैलुङ जाहिमे गौदङ-सिपार मानि
बनाय बैसल भटकी मारैत तथा चोरा-नुकी खेलिक अभ्यास करैत तथा कतहु-
कतहु कुकरी गगनोन्मुख भै भौं-भौं कय मुकैत देखि पड़ैत छैक।

जिज्ञासु पाठक ! श्रीमान् सहलोला बाबूक परिचय सौ अपने प्रायः अपरि-
चित होयब, केस ! विशेष परिचय पत्रिकार महाशय सौ ब्रुजि सम्पत्ति पर
प्रकाशित करब। किन्तु, सम्पत्ति हम एतेक अवश्य कहब जे हिनक पूर्व
पुण्या किछु साधारण व्यक्ति नहि। बड़े नामी-गामी, परिश्रमी, उद्योगी,
साहसी, मितव्ययी तथा अर्थशास्त्रमे बड़े निपुण, जाहि प्रसिद्धी बीसो हजार
हाणिक वाषिक आय हाथी-बोझा, सर-वचारी, गाय-बहिन, शर-सकास,
नीकर-बाकर सौ परिपूरित छलथीन्ह। किन्तु, खेद ! अपन प्रभुत्वमे विपुल
अपत्य, पचानासोती सरकुटुम्बक वनपट तथा हुनके समक सरसाहित्य
दायित्वक कारणे पूर्वाभ्युदयक सौभाग्य मदन सौ बहिर्गत भै गेल छथि।
परन्तु, ईश्वरानुग्रह तँ अष्टसिद्धि रूपिणी आठ सन्तान अर्थात् चारि बालक
तथा चारि बालिकाक सौभाग्यक पुनरभ्युदय भेलैन्ह। बालक प्रभुतिक नाम
हीरालाल, जवाहरलाल, मोती लाल, सोने लाल और बालिका विश्वमोहिनी,
मदनमोहिनी, कामिनी तथा वामिनी छलैन्ह। सहलोलापनक साक्षात्समे
पूर्ववर्त किया-कलाप मखानाक होम मध्य असीमाहुति दंत-दंत बीसो
हजारक आमदनीबला भू-सम्पत्तिके त्वाहा कए देखलन्हि। नितान्त भै भाव
केवल हजारेकहिक वाषिक आय बाँधि गेल छैन्ह। ओही श्रीमान सहलोला
बाबूक अन्तिम पुत्र कुमार सोनेलालक सिद्धान्त ज्येष्ठ बहि ७मी गर्भस्वरक
दिन निर्णय कराय पत्रिकार प्रभाव समयमे पाँच मुद्रा पुरस्कार प्राप्ति कय
मायापुरी प्रस्थान कयल। तदन्तर श्रीमान सहलोला बाबू सिद्धान्त वरिधायक
ठाठठाटक विचारार्थ निज दयाव कुबेरनिधि, रत्नचरितनिधि, मार्णिकचन्द्र निधि,
पद्मनिधि, मुकुन्दनिधि परसमणि निधि, पोखराजनिधि, विश्रुमनिधि तथा

खोरसाङ्गनिधि अर्थात् तथोनिधिक संम दालान पर बैसल-बैसल परामर्श करय
लागल छथि।

अधुमची पाठक ! अपने बाबू भाषा कनेक देखैत चलू। श्रीमान सहलोला
बाबू अपन अवशिष्ट सम्पत्तिपत्रके कोनविधि सँ निःशेष करवा पर फटिबद्ध
भेल छथि। विशेष करवे करवाह दोसर आन कोन कार्य मध्य, ई कि
कोनो नवीन घटना धिकैन्हि, वैह ओ वैह ! अरे कनेक कह्यो तँ कए केवल
हूँ-हूँ कयनहि तौ ककरी ब्रुजि नहि पड़ैतक। अहः अपनेक बहुति पर
किञ्चितो नहि चलैत अछि ? नहि चलैत अछि तौ हमरा सौ ब्रुजु, नहि तौ
भाषा चलू।

सिद्धान्त-व्याह ! बस-बस सन्धिविवरणक आब भाषा कोनो प्रयोजने
नहि। पट्टय उपस्थित भै गेल "सिद्धि + वा + अन्त = सिद्धान्त, तथा सि
+ आह = व्याह ! भाषार्थ जे सिद्धान्त विवाहमे लक्ष्मी सँ अन्त करैत-करैत
जातीवन विमोप आह भरैत रह्यो। की ? येही अर्थ पर ते अपनेक लक्ष्य
अछि ? वाह ! वाह !! अपनेक तीक्ष्ण बुद्धिक की विलक्षणता ब्रुजि पड़ैत
अछि। अपने तौ साक्षात् लालबुझकडे ब्रुजि पड़ैत छी।

उचितवक्ता दास-जी बहलोल बाबू लोकनि ! विमोहवसे सिद्धान्त
विवाहमे विपुल व्यय कयसहि सौ केयो घूर नहि कहीनक अछि। देखू
गोस्वामी तुलसीदास महानुभाव बहुत ठीक कहलैन्ह अछि "जरहि पातङ्ग
विमोहवस भार बहहि छर बन्द। ते नहि घूर कहावही समुझि देखू
प्रतिमान् ॥"

अस्तु ! श्रीमान सहलोला बाबू सिद्धान्त विवाहक एक विशेष प्रवन्ध
रचय लागल छथि। बहलोल बाबू कहैत छथीन्ह, जी मादारी ! हमरहु लोकनि
येही सिद्धान्त विवाहक मारल दीनाहीभावस्थान पकड़मे पतित भै गेल छी
तथापि येहुनो स्थिति मध्य जखन कोनो सिद्धान्त विवाह करक पड़ैत अछि,
तखन अपना अवस्था सँ विचारय नहि लगैत छी। लेतो-म्यहार बैधि जी-आन
जैछि-जैछि हाथी-बोझा, नटुआ-वर्जानिया, सौ वरिआल सजवे करैत छी,
अपने तौ घनाइये छी, तखन जी अपनेहि नहि करी तौ दोसर करवे के करय ?

सोने मनुष्या अपनेक अन्तिमे पुत्र लौक, एकर सिद्धान्त विवाह सभक सिद्धान्त विवाह सौ विशेष समारोह सौ सम्पन्न करिखीक, जे लोग हँसय नहि । नहि सौ समया सौ हँसबाक बहु लाज होयत ।

उचितवक्ता दास-जी सोपड़ीक रहनिहार रतभवतक भव्य देखनिहार । बरियाल सजबाक समयमे अपने सिन्हा बाइभीत सौ सुपतियहु सौ मातु करबा पर माय फिरीक मुड़वैत छी ? "चिन्हारे अहाँ सौ ---- करेछी कि शोभे" ।

मिय पाठक ! श्रीमान सहलोला बाबु यद्यपि एकन पुनीभुइसक सदन सौ बहिरितप्रत्य छवि तथापि पुरजन-परिजनक पीठ टीकोअलि सौ सादरक पीरा होनुनहि जकाँ फूति उठलाह और सहलोला बाबु सौ बलबलाय-बलबलाय कहय लगलसौह- "ओ बहलोला ! अहाँ बहलोला और हय सहलोला हमरहि अहाँ सौ बरियाल पावस समोदने नाकसांक-नाकसांक करक पदैत अछि । यदि अहाँ कहये करैत छी सौ हमरो आब दोसर कोनो करैबला अछि नहि, जकर चिन्ता करय । वेस ! अहाँ सबहि आब हमर बरियात सायनक घटा पर जटा जुनि पटकैत जाय । यदि अधिक नहि सौ कम्मो सौ कम्म फेइह हाथी, पञ्चीत पोहा, पाँच सड़लझिया, दु-चार बरहदरी, एक लामबीरा, दस पन्तह फई, बरी-जाजिम, दु-एक गिराह बटुका तथा पाँचो प्रकारक बाजो सौ अवश्य बाही लगन बेहि सौ अतिरिक्त वहाँ तक जे अहूँ, अहाँ सभ प्रयत्न कय सकी, जे करैत जाय । उपरोक्त आइम्बर पर सहलेल दासहुक मनक आवेग यमिह नहि सकलैन्ह, कहय लागल छसौन्ह, "ओ काकाजी ! अपने जखन एतेक करये करैक लगन बेकारा रवाइसेक येहुन कोन पूर्वजन्मक सपस्याक कृति छैकि जे ओकरा चिमुल करैत छियैक" । ताहि पर श्रीमान सहलोला बाबु कहीन छसौन्ह, वेस-वेस ! अहाँ बहलोला, बहलोला लोकनि- "जक-जक गुरया वदन बढ़ाया । तासु दुनुन कपि रूप देखाबा" कयल कहू । जस्तु ! उपरोक्त सण्डन-मण्डन तथा समर्थन होइत-हवाईत सिद्धान्तक विरसो आइ पहुँचि गेल । बड़ा मुहूर्तहि सौ श्रीमान सहलोला बाबुक सदन पर बरियात स्वाङ्कक सकल सागान गनै-घनै सञ्चित होइय लागल अछि ।

अन्तःपुरहु मध्य स्वजन-परिजनक सीमागिनी शुभाङ्गना बनिता, स्वर्णसता, विमलता, ललिता, मुसीता, चपला, अम्बुजा, चन्द्रकला, मनोभमा, क्यामा, रजिहरा, लारा, नीलावती, मालती, सरस्वती तथा दमवन्ती प्रभृति वीणा-विनिन्दित स्वर सौ साधयिक शुभांगन करैति प्राङ्गण केँ प्रमुदित करय लगनीहि । बेहि गमाजक कलरव सौ अनुमान होइत अछि जे भवनक संकीर्णताक संकोचे विपुल उच्छाह प्राङ्गण सौ उफताय-उफताय साहर बेहि जलल । बरियात भोव्यहुक एक विशेष चिन्तास भै रहल अछि । भोव्य कलराकूट करैत-करैत दारियाती बल कल्याक गमय विचारपुरक उधान अर्थात् सिद्धान्तक स्थान पर प्रस्थान करय लागल ।

द्वितीय परिच्छेद सिद्धान्त

‘कोउ सकहि न करत ब्रह्मज्ञाने,
बेहि लगी लगन सोइ जाने ।’

श्रीमान सहलोलाबाबुक भुवनगण आइ एक दिन पूर्वहि सौ सिद्धान्तस्थल सौ मुगज्जित कय रहल छैन्ह । परशिमण नामान्य शासिका सौ तिरस्कार करैय एक बीसति सम्भार भोवाराकासा विशाल लामबीराक द्रव्यक स्तम्भ केँ एकरोनाक बोल सौ आवरणित कय बाइ कयलक अछि । अशोभाय केँ कान-पुर एजमिन मिलल कम्पनी तथा आगराक बनीहैन सौ मरोहर दरी गलेचा गतरंजी, कण्डप्टरोन (जाजिम) सौ मुलज्जित कय रहल अछि ।

आलोचकद्वयक अर्थात् मयालनी तय दम्बई सिटमन जाइत तथा कल-कलर औनलर नाम कम्पनीक चहुँ केँ चकचोन्निबावय वाला शाइकातूक, हाथी तथा दिवाजगीर गैरह सौ लामबीरा केँ जगनचरित हृदय केँ हरक कय रहल अछि । अहमदाबाद कण्ठील (मोमबरी) कम्पनीक एग्जेंट बण्डिलक

विविध प्रवेष्ट (उपस्थित) कर रहत छथि । भागीमण्डली मनोरम वन्दनवार पताका तोरणारिक भी सामग्री के विमुचित कर रहति अछि । एवंप्रकारे प्रत्येक कार्यकर्ता अपन-अपन कार्य कीजालसक समुदा देखाय-देखाय सिद्धान्तक दिन बरिवाली दलामनक बाटाबाटी उपरवी न्यौरवत् लगीत छथि । रात्रिक ती बजत बजैत श्रीमान सहलोका बाधु दलबल सहित उपरोक्त स्थान पर उपस्थित भेलाह । स्थान पर पहुँचैत समुदा आत्मबलक भाँ त्यागित सुनक कण-बगल मोड़ कमगोला लगातार छहाम-छहाम करि छोड़त ।

आठ पहर दिन अछैत कन्याश्रम मनोरम लाभ सामान्य रीतिमे केवल बीस पन्नीस व्यक्तिमे नम सिद्धान्त स्थल अर्थात् विचारपुरक उपाय मध्य समागत भेलाह । श्रीमान सहलोका बाधुक राजनीय ठाठकाटक तैयारी देखि देखि किमुदा नै भेल छथि । लेग लगन मे उतावलात अन्यान्य नृपत्यबल कइये की सकैत छथि तथापि जहाँ तक 'सास' तहाँ तक आस, करैत डिक्कारि अनुकरक सहित परदसर दड़िगा बाजार पूर्णरिवित ग्रामदेव बाधुक कोड़ी पर पहुँचलाह और बाधु की बाबाय 'वर्तनीला' कर हजार शीशक एक हेण्ड-नोट (इन्वुलसकय बिट्टी) लिखि ताहुनीक हस्तमे समर्पण करि छोड़ी की शहरी मुद्रा मुद्रिआय भेल । तदनन्तर जोहम देवता तैहस पूजाक निमित्त विशेष-विशेष सिद्धान्त उपरुक्त श्रमजाय बाजार भी बर्तनीला कर पुष्पिन होइत तीन बगल कुलाहु अगु करदारा मे प्रस्तुत भेलाह और बगली कनधन कणक तहिन आधुनीय श्रीमान महाराजधिराजक बेसामे उपस्थिति मे विवेकन कयलन्ह । श्रीमान् ! सेफ कन्याक सिद्धान्त आठ पन्नीस ससन विचारपुरक उपाय मध्य होइत तहाँ बगलक दरपागन्य भेलाह अछि । आहि ती सिद्धान्त मध्य विशेष मोमान्-मुन्दर होइत । तज्जन आजा भेगककेँ जवान कयल आइत । आइँजित श्रीमान् महाराजधिराज नौ शकाने हुकुम देल गेलन्ह जे प्रार्थक के एक विशेष अरिवातक समुचित सामान अर्थात् पन्नीस हानी, पन्नीस कोड़ा, तीन तामदान सकल सामान सहित दलबलक नामक सामग्री, अंगरेजी बगलक वण्ड, स्वदेशी दू-तीन गिरोह भलक तथा दलवारह

प्रकारक बाइन, सिद्धान्त मोमान्-मुन्दर निमित्त तुरन्त देल जाइत । आइर (आजा) पास होइत सन्त सकल सामान बाँक बातमे जवान प्रस्तुत भै गेलन्ह तज्जन मनोरम लाभ की पुरन्दर सन मोमा धारण कयने सम्पदा समय बाँक बजैत-बजैत सिद्धान्तस्थल पर प्रत्यागत भेलाह । राज दरबारक बचुर कार्यकर्ताक दलना नौ महाराजक भीतरहि भीतरमे मनोरमक एक विजय विस्तीर्ण पडाल (सभा मण्डप) आगन-छाननमे सम्बोज्ज भी सुनजित भै श्रीमान सहलोका बाधुक पण्डालक आगने-तामने एक अनुपम छटा छहराकय लगलन्हि ।

उपरोक्त व्यक्ति विशेष परिचय सुनबाक हेतु हजर कतेक जिज्ञासु ग्राम पाठक केँ उत्कण्ठा लागि भेलि होइतन्हि ।

पाठक ! हम अपनेक उत्कण्ठा केँ छोड़बाक हेतु अनुरोध भेटा कय रहल छी । समवोचित पर उत्तमवित्तक पर्याप्त परिचय प्राप्त कराय देब । परन्तु एकर हम एतेक अरि अवयम कहि सकैत छी जे मनोरम लाभक पित पितामह जर्बैसास्त्रमे परम गणित कयकजीमे मक्कीचुरा गनहस कार्यमये कृपणताक साक्षात् अवतारे छलबीन्ह जाहि कारणे लाभ की केँ बहुजन धरि सए सामान्य विज्ञा साक्षराज हूड-हूड सए विग्रहा विग्रहा तथा काफती छैन्ह । सम्प्रति कएनहु खालपुर प्रस्तावक एक बीस-पचीस हजार रुपैयाक नामकीकायत मोर्बेक पटवारी छथि । रयति जैठरयतिक मोहि छाम मात-दान विशेष तरहेँ छैन्ह । किन्तु एतेक योग्यता भेलहुँ पर जकन तीन सँया बरनहाकला मजदूरी विपारी भीजे पर अवैत छैन्ह तज्जन देवतहि जकाँ पुनर्वैत तथा तुभ-ताम, रे-ने छोड़ि क्षेमर आम मोनी कये तहि पहुँ भी बाहर करैत छन्हि । किन्तु पर परतँ अपन प्रवृत्ताक पुनछर्दा नौ काकी कसैत रहलाह तज्जन ती बाधातु राजनीय ठाठ-बाट भी सभासम्पदमे विराजमान भै रहल छथि ।

उभयपक्ष अपन-अपन गौड बान्हि सुमजित तथा संज मृग्य भेल उप-वैसित छथि । सुगत तथा मण्डप मध्य भागमे एक सजल सट (भाड़ी वा

सीमावी पृथग्भाज तथा नवगणक सौ विभुजित स्थापित छेन्हि । इह वस्तुक समावधानिक धरदर सौ सिद्धान्तस्थल अति गुञ्जावरित नै रहल अछि । ओहि अवसर पर अतसौल केन्द्रिक एक विस्तृत होइला तथा कै निरवाचकास्यो मध्य भागित कय गेलक । अर्थकोपरान्त निस्तब्धता कै अंग करैत सरकारी तथा विचारी मल्लिक पञ्जीकार प्रभृति गुणलदलक नेता सौ सिद्धान्तकर्ताक अर्थात् सोडा छोड़िहारक परामर्शक परिक्रमा करय लगलाह । एक पक्षक सिद्धान्त-कर्ताक निर्णय करैल एतिपक्षीक दिशि प्रवृत्त भेलाह । उभय प्रक सिद्धान्त-कर्ताक निर्वाचन भेला पर सरकारी मल्लिक प्रधान पञ्जीकार अग्रसर नै लखलस नै निवेदन करय लागल छथीन्ह । "अई समाखद ! अपने सबहि सौ हमरा किछु बिन्ती कलैव, सोकोछ नै श्रवण कयल जाय । सम्प्रति बहुसौल पुराधिपति सञ्चित निधिक प्रवीध उचित निधिक पीन श्री सहसोला निधिक पुन चिरञ्जीवी कुमार सोमलालक सिद्धान्त मायापुरी निवासी मधुकर लाभक प्रवीधो सीमलाल लाभक पोधी तथा श्री मनोरम लाभक चिरञ्जीवीनी पृथीक प्रतिवे प्रस्तावित अछि । अपने सबहिक सम्मति यदि हो, सौ सिद्धान्त पढ़ावल जाय ।"

उचितवचता दास—औ पञ्जीकार अवर ! कथा ती मभ तरहै समतुल अधिकार जोच लेल अछि ते सिद्धान्त पढ़बला पर अपने उद्यम भेल छी ? सरकारी मल्लिक पञ्जीकार—उचितवचता दासजी ! हम पञ्जीकार प्रभृति अधिकारक अनुसन्धान धर्मोत्तरण ('पञ्चमात् सजमायुद्धं मातृतः पितृतन्त्रा' इत्यादि) तथा तुरपुर प्रवासी राजा हरि सिंह देव निमित्त पञ्जी प्रख्यासुखदे कयल अछि । बेहि गुणलदोही अर्थात् वरकन्या कै स्वातन्त्र्यता नहि छेन्हि । जखन अनाधिकार रहि तखन सिद्धान्त पढ़बला मध्य कोनो दासो बोध नहि होइति अछि । एवं प्रकार पञ्जीकारक सरटीफिकेट (स्वस्ति) देला पर सर्व सम्मति सौ सिद्धान्त अनुमोदित नै गेल । अल्पवत्ता पञ्जीकारामण्य सर-दारी मल्लिक उभयपक्षक सिद्धान्तकर्ताक पयहस्त सौ पूर्व स्थापित पाकके प्रहण करबाब सिद्धान्त शुक्लप पञ्चांगिक पाठ करय लगलाह । विमर्जन

होइतहि चतुर्विक सौ "सुभम्पूजा", "अर्घा सुभ हो सुभ हो" वाक्यक फूल-मर्षण होवय लागल । तयनन्दरे समास्थ सनातनगणक सम्मानार्थ नाता अचारक सुगन्धि वर्धन ओटो-सिलबहार, ओटो-सिल-चमल, ओटो-डी-मोतिवा, ओटो-डी-अमलत, ओटो-डी-रोज तथा वाटर-डी-रोज अर्थात् गुलाब जलक सिञ्चन तथा पञ्चाला पानपुष्पीक चित्रणक विपुलता सौ सनातन ओतप्रोत में जाइत भेलाह । गान-सुपारीक सौ एक प्रकार पयारि गेल । बेही अल्पवत्तके सरकारी मल्लिक विचारी मल्लिक, कृपाकर मल्लिक, कल्लर मल्लिक, विशद मल्लिक, मोचन दास घोघन दास, अपुख दास, अज्ञान सिंह दास, बनेल दास तथा दहलेल दास लोकनि सिद्धान्तकारक शक्तिशरीरकहने अल्पजन पथ की सोचनक बुद्धिह जकाँ बहरावय लगैत भेलाह । पथ प्रवर्धक छटकीअलि निवृत्ति भेला पर मणया श्रवण लागल सौ ऐह पीठ ठहरल । वही तिनानन्दके केन्द्रिक प्रवाहमे पड़ल वरपक्ष तर्क-वितर्कक महालाभरमे लगलाय लगलाह । वर-पक्षक अरुमे बहुलोक महानपुरुष हुंकार पुरय गेल छलथीन्ह । विवादाक दत्त मुस्तार सहसोला बाबूक दशा दैसि डाइस दैत संबोधन करय लागल छथीन्ह, "बाबूजी ! इसमें धक्काने की कौन-सी बात है । आप छटपट हम छटकीअन को छोड़ छोटीअल को पाँव में डटोखिये तुरत बाह पा जायेंगे ।" मुस्तार साहिबक उपदेश वस्तुतः वरपक्षक हेतु ओहि समय कर्णधारक काम कय गेलैह । छाटछूट कर कूट करय लगलाह ती केवल उनचाविसे उपस्थित और नाछि राखिअले अर्थात् अनुपस्थित । दिव्य दृष्टि ती देखल गेल ती अन्तिम कर्णे विधेवतर धिशु मल्लिक, मधू मल्लिक, वस्तु मल्लिक, अन्धक दास, कण्डू दास तथा बरबुरय दास प्रभृतिहिक अल्पजन पथ प्रस्तुत छलैन्ह । उक्त कथमकसु ठामठक् मल श्रीमान् सहसोला बाबू धनवाली व्यक्ति छलाह । ती गुनल लेनेह किन्तु उक्त स्थान पर यदि आइ अकिञ्चन दास वरपक्ष रहितथि ती हुनक की दशा होइतीन्ह तकर अनुभव कलकला काली-खाट, आनाम, कामाख्या, काशीविश्वनाथ, प्रयाग, त्रिवेनी तथा हरिद्वार धुरपैसी तीर्थस्थानक भूतभोनी मनुष्यो पाठक स्वन कम नैथु ।

अभितन्त्रता दान—'सीन बुलाए तेरह जाए देल यही की रीस । बाहर गले ला गये करके गले नीत ।' ओ विचारवान पञ्जीकार ओ ! येहुनि धरौहि कियेक ? अपने खबहि अखन पञ्जिप्रवन्धानुसार अधिहारक बीच बागबैल छी, तखन कतौन सिद्धान्त बूटि छय दूटि कियेक जाइत बहि ? अपने ती पञ्जीक समझे छी, हरितार्थ शशोक कथा स्मरणे होअत, स्वयम्पा-सायीक खेपे समझी छी चण्डाल प्रमाणित कयल गेलाह । उक्त दौपारीपणक शिवारणार्थ पञ्जी प्रवन्ध निर्मित कयल गेल जे भविष्य मे एतादुसी यादना पुनः ककरो भोग्य रहि गईकि । शास्त्रकार ती स्वजननानीक कण्डविधान योग्य नर्क निवारणे निर्णय कयने छथि । परन्तु अपनेक न्याय मध्य देखल निवर्माणनीक उत्तरधन कर्मानुसार पञ्जिकान्ध अज्ञानसिंह दास सिद्धान्त पड़ी-बिहार, पञ्जिकारक दण्ड विधानक निर्णय हय विचारहीन पञ्जिकार तथा म्याब श्रिय पाठकक विचाराधीन छोड़ैत छी ।

विचारहीन पाठक ! येहुन-येहुन आकस्मिक गण्डगोलक योग्यतरक कारण मुछल ? यदि कोनो पाठक की बीच कहि भेल होइन्हि ती ओ थार पारीस ती उपन्यास पढ़ने पत्तिलाय कय देनु या विशेष मननशील होय । अकिञ्चन दास गणपक्षक सम खट-बुर करैत रहैल छैन्हि, जे यदि कयानिनु कथाक विशेष चोलवाल होअनिहि ती पञ्जीकार कट्टक अखगलपसे पढ़क पढ़ाई । तन्निनिन पञ्जीकाराचार्यक अथवा अपन अङ्गित पञ्जीपट्ट व्यक्तिक सम्पत्ति लेखा ती मुहपोरि नैन छवि नै उपन्यासकार पञ्जिकारक पढ़कैली कसीडी घर कसने रहि जाइत छैन्हि । अट्टपट्ट सिद्धान्तक माथा हाथ दथ "निरस्त पादमे देशे एण्डोविड भावने" नै मननीकिल्लत कल प्राप्ति कय लैत छथि । सिद्धान्तोत्तर जान कयला घर यदि कदाचित् ओहि पञ्जीकारक पञ्जीवृत्तिमे अदूरदक्षिणा, अगदुता अवभिज्ञता प्रगट भै गेलैन्हि ती महल कोलाहल उठैत एक दोसर सिद्धान्तमित्रपणक वपनिका उठय लगैत छैन्हि ।

विज्ञान पाठक ! येहि अध्वकाण्डमे श्रीमान् सहस्रोला बाबू ती सहस्राधिक मूद्रा दानव्य भेलैन्हि । अस्तु संरक्षक विज्ञाना नै गेलि । आब कनेक

कर्मोपसक लीज पुछारी कयल अहित थीक । कर्मोपसक मनोरथ जान जे हज्जार टाका सिद्धान्त नीचेक निमित्त कृष्ण केतैन्हि ताहि ती ओहो कोन छने सुफल लेलैन्हि से मुनु । हज्जारी टाकासे ती सब सिद्धान्त इलबाइस तथा लम्क-लम्काने मुत्ता भै गेलैन्हि । आज सहस्रक मुत्ता ती मुन्ने हाथमे केवल एके सए रहि गेल छैन्ह । किन्तु उक्त तीर्थस्थान पण्डक "प्रतिपत्ति स्नाच्छन्"क रमक-प्रमद तथा शर्म-प्रपाकक दाखिल पड़ैत छैन्हि । राजक हाथी बीड़ाक अमावार गहनतुरकी ला तथा अंगरेजी-आजाक-बैण्ड मास्टर मिस्टर गैतान कम्हाः २६५) तथा ३५) शरीयाक एक-एक हेण्ड बिल (चिट्ठा) मनोरथ साधक हाथमे दय-दय कहय लगलैन्ह "दीवानधी ! अब हमलोनों को भी मुताबिक बिल के बिदाइ-सिदाइ दे देकर खन्ने रोखयत कीजिये" । बिल के देखितहि दीवान जी के १०६ दिवरी बीलार बहि अपनैन्ह । ठामहि हुहोय लगलाह । लाभनीक पुरहित मुमन्त झा सुवंगला तथा डांडकूकमे परम शरीण सफमान के दुलबी-लारि ती दुलबीत देखि शट मनोरथक गदग हाथ दय लागि-धुनि उत्तरदायक संन रहि-पहि नैहि पटपटावय गयलाह । मथ ती मनहि नन पड़ैत छलाह जाहि ती ककरो कणोकोचर होइतहि रहि छैक । किन्तु मथ ती कलूनन-कहुसन हुवाय प्रकाश नै जाइत से "बाहो लोकनि अपन-अपन अन्न-भक्षण जेही कयमे निरर्थक कुरंगीय करैत जाइत छी । जरे ! आजहु ती केतैत जाइ जाय । आजहु यदि नेतैत नहि जायैत छी भिवारियो ती कतर भै जायैत ।" हमरा लोकनि सिद्धान्त विवाहमे यदि हाथी, घोड़ा, गदुआ, अजकिया रहि करैत छी ते कि हमरा सभक विवाह नहि होइत अछि ।" एक दिकोआ जायत बीनो विवाह चिरा बिने नय छोड़ैत छथि । कुरोके कट्टर खगर्षी ती—'वातिथिहु रगलन' गुणगनः अस्वास्थ्यगण्ड "अर्थगताः काञ्चनयाश्चर्यास्तिक" अर्थ के सारथक करैत अगलोलुपताक कारणे बाप ती बर्षीय कानिपाक विवाह पचास साठि वर्षक बालक ती कय दैत छैक । कलोक अर्थोलोनुय मुता बिबेता ती ताकि-ताकि कय दण्डहस्ती, कर्मलम्बी, चिबुक चोकटिय, दन्त विगलित, धवलकैसी बिबेसी नवयुवक ती

कल्याण प्राविष्टकराया देत होऊं । कतोक ती गविमुक्ति कम किंहुं दीना
जमावली कम वेत । नव् भीतवहि मध्य सिद्धान्त विमल अमन्य कम वेतव ।
हमवाचोक्तिक वैवाहिक, वर्षावर्ष गहूने निदहाह वगल अलि से वगनीयक
कमधर, कर्मयोगान चिरवें जातु, नहि करैत अलि । विवाह विधियो येहने
सुखम ऐतिह्य दूकने छी जे स्वल्पहि अथ स्व कार्यक वगवेष कम नैत छी ।
यहि कतरी किहु विमेष अथ करवाक दूकरी बेवैकि ती कवा पदमत्ततभा
पर पञ्चीक काबिलदर के, दू-एक टाका केल दू अधिकारक किदही अंजना
वेतव । भी वेतव नहि, ती अही पवितव । कवीक विविधा ती सुखान्तक
सम्पत्ता समयेन कवा पदम-अथम गहवति ती वगव करैत भोर होव-होवहु
कल्याणतक, वगव पर पहुँचैत छथि । वैवाहिक सकल साधन वधा विहित
कल्याणतक भजन मध्य पूर्वहि भौ ओरिओल रहैत छथि । विवाहक सुगमगुण
वर्धन पवहि मध्य पवराय जाइत छथि, तथानि डेलि-अलि कम विवाह भोर
करने कोवैत छथि । कही लोकनि बीना उपानयन करव अनेत छी तवा यदि
सम्पत्तेन लज्ज अनिहहुं ती प्रायः एको व्यक्ति को दरिद्रसीमाहि दुष्टिपव
होवहुं ? किन्तु सति अपन प्रशंसा की कम, जाइ काहि ती हमरहु समये
मेवनेनक वाचार करने वेत जाइत अलि । पूर्वोक्त अहामन्यक वाचनि दैत-
दैत पुरहित की पूँह की कू-कू करैत मनोरमक भाव पर हवा कोइम जगलाह,
अवर प्रभाव भी तावनीक लागि बुधि बलकले उत्तरि भैलैनि । कवले
कुलकुलाम कम अलि बैसलाह और पूर्वकथित बिलसने पगलाह बीताही करव
अलि पर बिकट अंशमंशिक कावला करक पहुँचैत । ताइत-गहाइत, सगु
अन्य-अपन पुरकारक शीतता सुनि जाभनीक स्वचाहुत करैत अत्यन्त-अत्यन्त
कम जाइ कह्य जगलैनि । ताहि पर जाभनी दुर्वासाओ के, विवाह और
पक्षेपवगने कह्य जगलैनि । "हम जाव अहाँ सबके एको बीडवा नहि देख ।"
"यहि देव'क नाम सुनवहि तो कम अवाञ्छ कवाक और अपेक्षा कम जगलैनि
"जहि हराभी के चिल्ले ।" "जब तेहि पदम-अथ ही, यही वा की तुमने "नर-पदम
जब दूक टेढ़े कवी-किवा ।" राजकीय खराबी की होइता करवा कह्य जाइ

यही है, अब भी हमलोगों को दक्षिणा देता है कि और भी कुछ सुनकर टैंट
लीगता ।"

अब ! नितान्तमे स्वचाहुत कराव बहुकन सुनि जनसमाज मनोरथ लाभ
आशावात जेठरेवति ती दुह सय टाका हथपैथ लय बिल्ल मुताबिक स्वया
प्राय अपन मनोरथलाभ करव । सिद्धान्त वेक भेला पर उभय श्रम अपन-
अपन गृहागत भी सिद्धान्तक अवरोधाहु सम्पन्न कम स्वल्प होइत गेलाह ।

अनुभवी पाठक ! सहजोत्पन्न तथा देहात्मिक प्रतिफल देसन ? वगव
वगव टाका बाटहिवाट पावन भी नेवैनि एको समर्थीक स्वार्थतामे अविनैन्ह
ती पक्षोपपन्नक कहि सकतहु । युगत समशीक अवरोधक विमपट देखि
कहक पवैत अलि जे-सामान्यहि ती कम जनसुख व्याह प्रीति अथ वेर ।
कवाशक्ति विमनानुकुल करवहिमे अलि खैर । नहि ती "सम्पत्ति भरम गताय
ती मुख हेरत अति-हीन । स्वती मौ त्याजित सति नहिह ब शोभा दीन ॥"

तृतीय परिच्छेद

विवाह प्रकारण

हम नहि आजु रहव वेहि आज्ञान जो कुछ होइत जमाय ।

वर्षावर्षावमे मनोरथ लाभ के अनुभाव एक दर्ज पत्रिका घर मौ देहात
पर नेवैनि जे अपने कान मे तूर देगे पेहात पर बैसत छी, अर मध्य कवा
आम रक्षापीया नहि अलि लकर चिन्ता लेशमाओ नहि रखैत छी, गाम मध्य
मध्य अपन-अपन काव्ये कतेवता भिवाहि लेलक, केवल अपनहि पाछां पड़ि
गेलहु अलि । " एको रानुक हेतु ती नाम घर आवि सलाह बिचार कम जाइ ।
कारहय पत्रिका हस्तगत भेला पर आइ फालगुणी आमावस्यामे मनोरथलाभ
पर आएल छथि । पुरखन-परखन स्वजन मध्य कुशल-खेम पूछि-पूछि कह्य
वाचल छथीन्ह "अपने येहि बेर बहुत दिन पर नाम अवाञ्छ अलि ?
"विमयाक विवाहवान जेहबेर कारबैकि कि अवाञ्छमे देखैक !"

मनोरथ प्राप्त—औ भावजी ! की कहु एक तीं सरकल गीं अर्थकोक
बनकाये नहि होइत छले । दोमरा सहैवो येहै भुताह छले कुरकतोक नाम
मुनैत मन्ता हण्डर (अष्ट) सुमान आँखि सुनि भौइत छलैक अछि । तान्त्रिक
कृपा सौं एखन को जतवातु परिवर्तनक निमित्त तीन मासक हेतु दारजीतिहु
आएल, छवि । कतेक कहल—कहौनां पर एक भासक छुट्टी देलन्हि अछि ।
अपने तब तीं नाम पर विश्वासले छलहुँ, किन्तु नहि बिबाहक एक मुन दिन
मन्त्रादिक हेतु बहलोलपुर पठनाय देल, स्वीकृत भेला पर तीं हम कोसो धराने
अपने कारतहु । वस्तु ! गन्ता केँ आब सोचने की कान्हिये अपने सबहि वैधि
ज्योतिषीजी सौं एक गीत दिन तकनाय हजामत हाथे पठनाय दिवौक । यदि
प्रस्तावक अनुमोदन समर्थन भेला पर पूज-पौष्पछनक नामा प्रकारक गन्ध-शष्पक
कारिहान लगान लागल । कारिहान जगजग पर सबहु गोटे फमकः बन्तगान होइत
बैलाह । तदन्तर मनोरथ काशी स्नानाङ्गन लगानल भेलाह और भोजनोत्तन
समवाचारने निद्रा देखैक आवाहन ताक द्वारा करय लगलाह । अन्ततः समये
नामकी औचादिक तीं निवृत्त भी पुनः दायक श्रुतिक एक विशेष अधिवेशन
कयल । विनम्रति जा ज्योतिषी पना केँ उलाट-मुलटि देखैत-देखैत काहगुन सुनि
पुनीत पुणिमा एक विशाहक शुभ दिन निर्णय कयलन्हि । वेही दिनक निर्णय
बस शिवदाय मोचन ठाकुर हजामत हाथे बहलोलपुर पठौलन्हि, मुनहारि नाग
होइत-होइत हजाम ठाकुर बहलोलपुर श्रीमान् सहजोसा बाबुक डेउडीपर
समानल भेलाह । हजाम ठाकुर बिबाहक निर्णय पद लगलाह अछि । ई
शुभ मन्त्राचार मुनितहि पर प्रद गति हर्षितकुल भी हजाम ठाकुरक विशेष
बहूनाय करय लागल छथीन्ह । हजाम ठाकुरक शुभांगमनक समाचार हवेसीमे
पहुँचैत गन्ता कसमसिया खवासिनी हँवलि-नीहँवलि कसमस करैति हवेसी सौं
बहराय मोचन ठाकुर तीं कुशलधर्म पुछय जगलन्हि ।

कसमसिया—औ हजाम ठाकुर ! अरे कह-कहु समझिनीक कुशलधर्म कहु ।
कनेयां, केहेनि, कतेकटा, हरियालीक जयवा-पीडाक ओरिओन-परिओन कोना
की कही आहौक ओहिहान होइत अछि ? हपरत हवेसीक लोक तीं आब

परप दिन सौं आहौक वाटावांटी पर्यहै जकाँ लक्ष्मि छलै । हमर महत्व
भोजनि तीं मनशुवाइत छवि जे बरिवाती ततेक जय जयबँह जे कनेया-
बागक धरक कहु एक-एकटा कय भोजि लीतन्हि । वेही बेरि तीं ओहो भूषिक
परि बैसताह ।

मोचन ठाकुर—अब खवासिनी ! कुशल परवन तीं तब खूब बड़िया
किनु अहौक एतेक सवालक जबाब एक्के बेरि दैत तथा अहौक बहचही
कलैत तथैहुँ रोमाञ्चित होइत मन कोना-कोना दन करय लागल अछि ।
हमरो मनोरथ सबुधा किछु बाजीमुखी आयसो अछि नहि, देहात सौं भवि-
ष्य तथैवा लागल अछि । अलावे दस-धौन हुकर अगरे-पछणी सौं जयतेक
तीं कि कोनो बातक पक्वाँह करत ? अहौ अन्तन खवासिनी केँ कोनो बातक
हीमाका छयाय नहि राखय कहलैन्हि ।

पाठक ! वेहि युगल जिहामुक पारस्परिक आत्मीयापक रसास्वादन करय
बध्नि अपने केँ आब आमां अधिकार नहि लघावि बिबाहक शुभदाय तथा
हीरीक होहकार सौं यदि धुपले पर अपने कमर कधि लीनी बाबाजी भेल
सम फतने युगल जोड़ैक समस्यी आत्मीयाप चटनी चुपचाप निखैत थलु ।
हमहुँ अन्तन जगन्नाथ तिलक बैलकहु अछि लगन तीं भीक की अछलाह सभ
सभ सी इति तक पहुँच बनैत छी । नृत्त कसमसिया हवासिनी केँ की कहैति
लैन्हि ।

कसमसिया—बेस-होइ ! नमस्ति केँ डोइ सकलत कयने रहय कहलैन्हि ।

मोचन ठाकुर—अब खवासिनी ! देखब ! जाहौं अपन तीं पहिले मेकन
अपने पहुँ ।

कसमसिया—दुरी जी ! अहाँ तीं बड़ पकडोस मसोसिया बुझि पड़ैत छी ।
बेस-बेस अब अहौं योगरान पर धंटा गजाय-बजाय श्री जगन्नाथ जी कह ।
आब हमहुँ हवेसी आइति छी । ओ हजाम ठाकुर ! एक बात तीं पुछबे हम
छिगरि गेलहुँ । आइ तीं अहौक मोहिम भीबाइन केँ प्रायः निराहारे शत
करक पड़ैतन्हि या फलाहार करयबाक हेतु ककरो राखि अवलैबैन्ह अछि कि
बनहन नोपाबे ?

मोचन ठाकुर-पारणाक बेरि तो रमिताराम हम पहुँचिबे अवैरैन्ह, किन्तु एखन तौ अहौ नै हमरा बृहन्नत बतिधि अभ्यागतक विशेष भाव भक्ति तन-मन सौ करब उचित थीक ।

कामसिया-ओ हजम ठाकुर ! हम तौ अहौक बहिनि-पितरसीक दामिल छी । छिः छिः छिः हुनकहूँ नम पर अहौक ओहने भाव-भक्ति रहैत अछि ?

उक्त कथा कहैत कलस करैत कामसिया प्रत्यागत भेलि और हजम ठाकुरक हरमजदारीक मातलिप सौ ह्वेली मध्य सभ कौ हवाय-उहकावम लागलि । तदनंतर श्रीमान् सहलोला बाबूक हरिफला हजम, सखना सवास प्रभृति प्रस्तुत जे भौति-भौतिक मोज्य पदार्थ मोचन कौ भोजन करावय लगवैन्ह ।

भोज्य सामग्री कौ मोचनो ठाकुर ओहिना मुलमे दुनव लगलाह जहिना पच्छिमाहो बहलमान ताल मिरचाइक संग सातुक मुठरा कौ मुल मे अंगुठा सौ ठूँत अछि । अस्तु ! ठुलि-ठुलि कय मोचन स्पष्ट भेलाह । तत्पश्चात् सभहि गोद परस्पर हाहा-हीही करैत निद्रा बेबीक शान्तिमय कोइक सुख अनुभव करय लगैत गेलाह । जेपने जखन विशा देवी निज धोष्ट पट उतारि अन्तःपुर प्रवेश कयलैन्हि तखन श्रीमान् सहलोला बाबू हुनक मुखमय सदन सौ बहुराय स्वजन-गुरजन कौ हुंकारि विवाहक स्वीकृत पत्र लिखवाय मोचन कौ वर-विवाह तथा स्वीकृत पत्र दय बिदा कयलैन्ह । हजम ठाकुर केष्य विदाइ नौ कुलकित होइत सन्ध्या समय माझपुरी प्रत्यागत भेलाह और स्वीकृत पत्र कौ मनोरञ्जक करकमलमे समर्पण करैत अपन गृह गेलाह । स्वीकृत पत्र कौ देखैत-देखवैत प्रमुषित होइत लाभ थी निज कुलदेवी विपुरकुन्दरी सौ कालिकाक पादपद्म पर समर्पण करैत मङ्गलाचरणक अनुष्ठान करय लगलाह । तत्काले सभ भद्रि हुंकार पड़ल । परिजनक सौभागिनी धुनाऊनाक समान एकवित जे भोकाउतिक तथा मङ्गल सूचक शुभवाचन सौ लगन जगावय लैति गेलीह । तत्पश्चात् तैल-सिन्दूर, पान-पुङ्खी तौ सम्पातित जे निज-निज भवन प्रत्यागति भेलीह । विवाह-दिवसक निर्णय भेला पर हुहु प्रद कौ

विवाह-कार्यक धूनि समवर्जिन्ह । 'एता कर, ओना करक' सप्तस्वर उभय ओर उठय लागल ।

विवाह पाठक । आज कनेक चलैत चलू ओहू दलमे धूमि-धामि कय भिनि-धुनि आय जे कोन बिधि कोन भौतिक विवाहक ठाठ ठाठल जाइत अछि ।

पथ परे उत्तरैत देखल जे श्रीमान् सहलोला बाबू राजानक प्राङ्गणमे ईशक-बैलक विवाह यज्ञक प्रबन्ध कय रहल अछि । जे-जे अवैत छैन्ह, जे-जे लयब कहैत अवैत छैन्ह "सरकार ! आज अपनेक बिहारे उत्तरैत अछि सोने इन्नाक विवाह दान सभक विवाह दान सौ अछि-बढ़ि तथा विशेष समारोह सौ सम्पन्न करौक । उक्त कथा धूमि-धूमि चैया जवासी एम्बर-गोम्बर नाम बाई-बुईक चरखी चरखाय रहल अछि । अहम सौ कहि रहल छैन्ह-"सरकार ! ई सभ सरकार कौ उचित कथा कहैत अछि । एखन अपने कौ आज दोतर कार्यमे कोन उत्पन्न अछि ?

सहलोला बाबू-री बैया ! तौ कनेक प्रपंची ठाकुर विवाही कौ तौ बवाय लगलैक ।

बैया-बेस सरकार ! प्रपंची कौ पकड़ने लगले हम हुनूमे हाबिर होइत छी ।

प्रपंची-तावेदार हुनूमे हाबिर भेल । की हुनूम होइत छेक ?

सहलोला बाबू-हो प्रपंची !- तौ कनेक हजमुक सोनार, गिरहकटुआ कपड़का, जदुआ वनिया कौ जव पकड़ि लावह ।

प्रपंची-बेस सरकार ! एतने कि औरो गोइ कौ पकड़ि जयवाक हुनूम होइत अछि ।

सहलोला बाबू-हूँ हूँ ! औरो जे कोनो दोसी-पहारी हो, तकरो सभ कौ बलीक खबहक ।

प्रपंची-बेस सरकार ! सभ कौ पकड़ने केरि फौरन हम हुनूमे हाबिर होइत छी ।

सहलोला बाबू—रौ चैया ! हूहू बगड बीति गेलैक प्रपंची एखनहुँ धरि नहि अवलोक देख लौं नी चियय बिकैक ?

चैया—सरकार ! विषय की होवतैक, भुईहार भाइ थीक, कोनो प्रपंच करैत अपन मत्तसय गठैत-खटैत होयत ।

सहलोला बाबू—छेहू तो बड़ बुद्धिबक रौ ! गठैत-सठैत की कहैल छेहू । शीघ्र बचवहीक ।

चैया—प्रपंची अन्ये गेहने-गेहने जहई जाएत तहई खेडरपनी करय लागत । रौ खलना ! कनेक धारां बहिकय देखहीक लौं अद्वैत अछि कि नहि ।

श्रीहरिनाम लौं सखना सखसैत चिया जेस और प्रपंची-प्रपंची कहैत कहि लगैलस ।

प्रपंची—हौ खलनू । शीघ्रबहिमे चिनिआय कियैक लगैत छह । खलने लौं अवैत छी ।

खलना—हं हौ हं । कहवहुं जे कियैक ? “कुटि-पीति लामधि हीरा, माँइ पसवधि सीरा ।” एकदरे खयबहु लौं पेदे काटि बसलौह ।

प्रपंची—हौ खलनू ! शीघ्रबहिमे चिनिआय कियैक लगैत छह । जाहि डाम प्रपंची, जाई, खलन, ताहि डाम लौं खलनमाइत कियैक छह । तोहरो ठीक-ठाक कय देखह ।

सहलोला बाबू—को हौ प्रपंची ! पीनी-पसारी प्रभृति अस्तुत भेलहु ?

प्रपंची—औ सरकार ! पीनी-पसारी सब बोधे-धौत सरकारी साया मे संयुक्त भेल अछि, जे हुकुम होइक ।

सहलोला बाबू—हं हं ! तन के शीघ्र शोर पारहुक ।

प्रपंची—हौ हूहू, जहू, गिरहुकहू, चपरगहू, निखहू, बरहबहू, लोकनि । सरकार लगने हाथिर होइत जाह ।

सम बरहबहू, एक स्वर सौं सलाय सरकार कहैत थी गान् सहलोला बाबूक मुखचन्दक चकोर भौ टकटवी लगौने जाजाक अक्षीका कय रह्य अछि ।

सहलोला बाबू—हौ हूहू ! तनकिरबूक विवाहक समाचार लौं तोहरो सब के निहिते मे गेल होयतहु । समय आब रहलैक तहि तथान तेहन यत्न करहुक जे गहना-गुरिया सब बहुत जल्द तैयार मे जाइक । सोलानाथ बाबूक संव लौं सभा भैंसां बहिनंग बाजार सौं लामे पाँच हजारक सोन-चासी कीमि लागत । गहना गुरिया शीघ्र तैयार भेला पर तोहरो जव्वल इनाम देख सकतहु । रौ चैया ! हवेनी लौं पाँच हजार मुदा माँझि जा ।

मुद्राका मुख सौं बहराइतहि चैयां सवाय अन्तःपुर बीड़ि गेल और कुड़ी पल्लवाइत सौं निवेदन करय लगलैन्ह “बाबीनी ! बड़का बाबा पाँच हजार लीला माँझि पठेलैन्ह अछि । जन्ती दियोनिन्ह ।

शीमली केठरानी देखी—बाहू रे चैया ! मुहक सरसै जहिना मालिक कहि जयपुर लहिना तान सोईत तबित गति लौं बीड़ि अवलैन्ह अछि ? ताति किम आछ पहर नीलति बढी फलोक हेनु हुनका हरदम हम्प-हाम होइत रहि छैन्ह । हमरा कौन्ना-कोड़ी आय जाओत कहाँ सौं ? जे किछु बेले लगात से सब लौं विवाह-दान करैत-करैत बिघाटि गेल । सय बूइ सय हूबसो खल लौं ताहि लौं कि जेदक मुँहमे जोरक कोरत होयतैक । जो पलुनम “गुनग हूबसे आय कामी-कोड़िरो नहि छैनिह” लखिनतक बाप लौं गुन-गतर भित मोजूते छथीन्ह, दस-पाँच हजार हुनकहि लौं हथकेर वा फथ कर । आगां-गछां सखैत-बखैत रहतैन्ह । सोनमा हमर कोरपीकू थीक जकर विवाह तन लौं विशेष रूपे कय देखुन्ह । धन-सम्पति ब्राव रखबै करताह सोन दिन लय ।

श्यामिनीक लक्ष्मीमार जबाब लौं चैयां चुरमचुर भै अपन मुँह मोहल-मुसिधे खन कयने लौं-पाँच करैत बिमुख भेल और शीमान सहलोला बाबू लौं सय लागल छैन्ह—“सरकार ! मालिकिनी लौं नाक पर माँझिमे नहि बैतक करैन्ह, कहैत छथि जे आब माल-मिलकिताति रखबै करताह कोन दिमुक करै । विवाह-दानमे बिना खण-बैष कयने कि ककरो शोभा सुन्दर भेलैक

अच्छि । आइ-कान्हि तौ बिवाह-दानमे कृष्ण-नेत्र करम एक प्रकारक विधिमे लोक मानि लेलक अछि ।

सैयाक मुख विनिर्गत निराशाजनक बार्ता कर्णकुहरमे प्रवेश होइतहि श्रीमान् सहस्रोला बाबूक हृदय डामाडोछ होखय तबसेन्ह । चिन्ताम्वित भे जल्पय लगलाह ।

सहस्रोला बाबू-हाय ! हम तौ कहितहि छलहुँ अछि जे टाकाक हेतु हमरालोकनि यदि तेकठोरी पर टांगल जाइत होइ तौ नवीनग मोसलिया सैया कदापि नहि बाहर करय । बेच, रौ सैय ! पीनी-पसारी के परसु प्रस्तुत होयबाक हेतु कहि बठोक । और मित्र महाजन के बजाय लवहुय ।

बाइ ठाकुर-दोस्त ! आइ कोन तेहन जनाधारण कारण धिक्क जे अपने असमयमे हमर स्मरण कयल अछि ।

सहस्रोला बाबू-मित्र ! मनकिरजाक बिवाहक दिन निवृत्त भे लेलक । हाथमे फूटलि चित्तियो नहि । तखन कथ्यक निव्वोह अपनेहीक हाथमे अछि ।

बाइ ठाकुर-दोस्त ! ई शुभ-समाचार सुनि बड़े हर्षित भेलहुँ । किन्तु आइ-कान्हि तौ टाकाक परम करहरी मे रहलि अछि । कारण जे हमर बहुलथा सैया के लहुका सभ अपना-अपना घरमे लोमाव लेलक अछि तथापि जिबैत बी जहूँक मांस अनक कीना प्रहण करय देखक । अस्तु ! सञ्चितबाक बाय के पुछैत छियैक ओकरा यदि कोसलिया सैया होयतक तौ वहाँ के अवश्य देव । कजु कतवा टाकाक आवश्यकता पड़त ।

सहस्रोला बाबू-अवश्यकता तौ अथाहि । किन्तु तत्काल एक बारहे हजाराक अछि । शीघ्र गेल जाय । हम अपनेहीक भरोस पर सरोप रहैत छी ।

बाइ घर घुरि अयसाह और निज घरकी कोसल कुमरि अर्थात् सञ्चितक बाय तौ परामर्श करय लगलाह ।

बाइ ठाकुर-प्रियतम ! जहो के अपन कोसलिया सैया किछु अछि ? बालकक बिवाह निमित्त दोस्त अपन मांस बेचवा पर छयत छथि । हमर

सैया सभ कर्षकोरक घरमे कनि गेल अछि । सपैया बाहर नहि कयला तौ हमर बड़िया मित्रक मांस अनके हाथ लगतक ।

कोसलिया कुमरि-जीवनधन ! हमर तन, मन, धन तौ सभ अपनेहीक सरोहुरि लोक । जे आज्ञा हो । हमर नोसलिया कोष मजब सपैया, मोहर, चिनी, लोड, सभ जिनोष प्रस्तुत अछि । जाहि रकम पर रचि हो आदेश कयल जाय । किन्तु द्रव्यक बोझ कहाँ तक डोहीने जायेन एक हजारी लोडे छल-बारह सौट हथियौने जाइ । कागज पत्तर लूज पक्का-क्षयक कराय लेब तखन सपैया दोस्त के देखैन्ह ।

बाबू नोड के बोलीक बट्ठा मे कोसि बांदाबकता खाँ लेसनवार तथा सरोखलाक कातिव (लेखक) के संग सगीने बाइ ठाकुर श्रीमान् सहस्रोला बाबूक सम्मुख उपस्थित भेलहुँ ।

बाइ ठाकुर-दोस्त ! सपैया देख तौ स्वीकार कयनेन्ह किन्तु कहैत छथि जे दोस्त के तौ सपैया-आदाशक आदित्ये नहि छैन्हि । केवल बाणे-मिलकीयति पर आइ सेहो खोजिये-सिधाय कन केबाले कय देवाक जानि पड़ति छैन्हि । हुनक मांस-मिलकीयति सभ अहिना विद्याएल जाइत छैन्हि । दोस्तक दक्ष शिक्ष-देसि भित्त बड़े चिन्तित होइत अछि । आबहुँ हुनक अवकिष्ट मांस जाहि तौ बाँधि जाइन्ह, से प्रबन्ध धरान सपैया देखैन्ह अर्थात् दस्तावेजक कर्त करन कठोर लिखबय लेनेन्ह जे सपैया परिशोधनक भीषण भय रहैन्ह, तखन सपैया शीघ्र सथाइ देलाह । तमस्कुमे सीमि सपैया संकड़ा माह्वारी छूट । साथ गेल भेला पर सुदी सपैया अगल भे सुदक दर सूब चलय । तीन साल के सपैया यदि सथाय नहि सकथि तौ तमस्कुकी मांस ओतवाहि सपैया मे कृष्ण-बाबू के निविचार हस्तगत भै जाइन्हि । बेहि अभिसन्धि तौ बड़े भयभीत छथि परिशोधनक विशेष चेष्टा करैत रहलाह । कृष्ण परिशोधनक बेरि बुजल सयतक । वृद्ध मित्र आदेश मे हरिछाय-परिछाय लेब । पूर्वोक्त नियम यदि सपैया के स्वीकृत हो तौ हम जयनवार तथा कातिवी के संगहि गेने आएल छियेन्ह ।

सहस्रोला बाबू-मित्र ! हम बति आर्तमन्द छी तखन “बारह काह भ करहि कुकरभू” के मूल्य मानि अहाँ तौ कराक छोमे नहि, तखन जेना जे

बर्त सञ्चरन मे निजवाय विप्रीक हूब औसि मुनि नाय हस्ताखर कय देव ।

पाइ ठाकुर—औ मुनजी खदेरनवाज । खोशबकल खा ही स्थान सरीरि तमस्तुक जल्द औसि खाव । तावतकाल हम बूढ़ दोरख अन्धान् गप्प-काप करै छी ।

मुनजी खदेरन ताल-बाबू सहाय ! यह लीजिये तमस्तुक-तैयार सूर बनत । सह (मोकीर) मे बड़ी गवाड़ मे गवाड़ी (साख मे साधी) रजिस्टार मे रजिस्ट्री करवाकर बाबुजी की आज ही जर-जगर हवाने कर दीजिये क्योंकि जर को हवाय करने के लिये बाबू ताहक बेकार हो रहे हैं ।

पाइ ठाकुर—बोम्ब ! "अब बिलम्ब केहि काम रचहु सेतु उत्तरन कदक ।" तमस्तुक पर कयसे सही तथा गवाड़ सी गवाड़ी कराय रजिस्टरीक राखन नापू । बेसन ! से प्रबन्ध करके जे रजिस्टरी-कागजक इलीखी आउये मै जाय ।

सहलोका बाबू—मिम ! लाड़-लाड़ तमस्तुक लाव, श्रीगणेश कहि तमस्तुक पर हाथ धनु ।

पाइ ठाकुर—बोम्ब ! तमस्तुकक सबनुती धरि तो कनेक मुनि लिखीक ।

सहलोका बाबू—पुर्वीक की लीजी होत होनकता लेकी उपजे बुझि होनहार हिरये कये बिखरि कय सब सुझि । कुनजी पावो प्रबन्ध जो प्रबन्ध की घूड़ । राई घटे न हिल सई लिखि अंक निधि वूड़ ॥'

उपरोक्त कल्पना करैत सहलोका बाबू स्वयं सही बाध्य सी माछी कराय बकला जा परिचायक (विमान्यकार) को रंग लगाय पाइ ठाकुर सहि रजिस्टरी जांच काजिक काल ।

रजिस्ट्रार साहेब—सहलोका बाबू ! कयसे तो बाक पा गये । तमस्तुक का बर्त इतना कड़ा कहीं है ।

सहलोका बाबू—अबूर ! कयसे तो अब पा ही गये । तमस्तुक का बर्त कड़ा करवाया ही मेरे मित्र की दूरदिली है ।

रजिस्ट्रार साहेब—कयसे तो अब पा ही गये की माजी मैने समझा नहीं ?

एतवा कथा मुनिर्ताहि पाइ ठाकुर रजिस्ट्रारक अध्याक्षिमे एक दू तीस गरीत एक-एक हज्जारक बारहो गोट श्रीमान् सहलोका बाबू की गति देखीयौह ।

तापदचात् रजिस्ट्रार साहेबक विशेष कृपा सी रजिस्टरीक सभ कार्य तत्काले तानील तथा तमस्तुकी ततक्षणे भेटि गेनेन्ह । अखन तमस्तुक के बाइ ठाकुरक हाथ मे समर्पण करैत संगहि संग सबहु गोटे अपन-अपन गृहा-निमुख भेलाह । रास्ता मे स्पच्छ स्वभाव सहलोका बाबू विचकुम्भ प्रयोमुख भिन्न पाइ ठाकुर को कहैत अर्घत छथोन्ह, मिम ! अपने आज कृपा कय बिवाह कायदेक निरीक्षण करैत रहबैक ।

पाइ ठाकुर कहू ती प्रता । इहो कोनी कहवा मुनबाक बात बिके कि, अपन कार्य थीक । एसन अग्रान्द समथ मै गेल अछि । मुहो हाथ धौएन तथा पैद-पुखी आँकिये अछि ।

एकअक्षर बारम्बार वातालाप करैत-करैत पुगल मिम अपन-अपन गृहागत भेलाह । तृतीय दिन सुबेर सकास सहलोका बाबूक पीनी-पगारी प्रभृति पुनः प्रस्तुत भेलन्हि ।

चौवा—सरकार ! पीनी-पगारी सभ हाजिर मे गेल, जे हुकुम हो ।

सहलोका बाबू—अब की पहिने हड़पूवा सोतार के तख करहीक ।

इहपू सोतार—धम्मविचार । बिवाहक दिन आज रहबैक नहि बलू महनी-

गुरिया धनुये-झाकी गड़न होयतैक बलू । थोड़बहि मे सरकारो हृववण्डा

छावय लागब बलू । यहु किञ्चिद कालमे यदि हमरा अपना मन की काम

करय देव तो बलू हम अपना समिन्तीतो भाय सभ के अन्धकार-अन्धवास काम

अन्धकार मन कनेत छी बलू । अगर सरकार पीठ पर सवार भेत रहैब तौ

हरे पिनिदमे समकीत रहत काम की करब खाक बलू । खैर ! लखन गरमे

होले भईत अछि ती कोनी घराने बनावे बरब बलू । अलाबे ई दरवार तौ

हमर पुनीनी थीक बलू । सरकारही दरबारक प्रसादान गढ़-जग-जग विगहा

बड़ीतोती हासिल कयने छी बलू । आजहु मोह-पानी जल्द संगवाय देव

खोख मे काम नाकक सदरक-सदरम चलत, बलू ।

सहलोका बाबू—औ श्रीमान् बाबू, आहो ! हरपूवा तथा चौवा नीनु गोटे

एखने यक्षिभंगा बाजार सी पाँच हज्जारक मोम-नानी कीमि लाव । शिव, गणेश

हज्जारक पाँचो नोट धर ।

श्रीमान् बाबू पाँचो हज्जारक नोट के अज्ञान केबसे राखि लेल । तखन

नीनु गोटेअठ-अठ दू प्रसा मुँहमे लगाय, मुँह-हाथक जगडा डोड़ाव, चट्ट दाहिभंगा

विद्या भेदाह और मोहन साहूक बोकाय पर जाय सोन-बानीक भाव-भाव पढावय लगलाह ।

सब तीं पूर्वहि हड़पू धपना सोनारो जौली, सांगि सिपार-सोकने मोहन साहू तीं साङ्गैतिक बातचीत कय प्रकाश्यमे कहय लगलैक, हो मोहन साह । देखिहह, हमर भोलानाथ बाबू भोलानाथ छवि बलू । नीकर कोनो तखहक कच्चा मलि बहून बलू ।

मोहन साह-हड़पू ! तुम तो खुब जानते होगे क्या नाम है कि, मेरे दुकान-सा सस्ता और नौला माल क्या नाम है कि साहर घरने कहीं हमरे कयह मिलता न होगा । क्या नाम है कि, एक बार पचीस-पचास का नफा न सहो न सही । एक बार कीत कहे तीं बार बीदा से जान क्या नाम है कि, चांगिन या नापसन्द हो तो महीने रोज पर वापिस दे जाना । क्या नाम है कि, येने वही, रोल मजुरी नौला कान होला है । क्या नाम है कि, अभी अभी अरनीछर बाबू, हल्ही बाबू, ऐठहू बाबू, बागोदर बाबू, क्या नाम है कि, मनोरथ बाबू हजारो का सोना-बान्दी मेरे ही दुकान से ले गये हैं । क्या नाम है कि एक बार तुम भी ले जाय । देखो साहे पंचि हजार का माल क्या नाम है कि पंचि हजार में बाबू साहिब को दे रहा है । और ! क्या नाम है कि, एक बार चाटे ही सही । भेल-नाककत हो जाये से फिर तो क्या नाम है कि, बाबू साहिब का घर तो मेरा ही हो जायेगा । हम भी क्या नाम है कि, समझ लेगे कि, आइने के बिये बाबू साहिब का बरवार ही छापा है । श्वस्वकारे चिकन-बुनमुन वातलाप सी भोलानाथ बाबू की मोहि-माहि कय साहे चारि हजारक माल पंचि हजारने दन तथा सलान कन्दवी करैत बिदा कयलैकह । इहो नुदेव सोन-बानीक गठरी बंधि नाकक सोझ रास्ता छयने नुयकोव होइत बारह बजैत-जैत बहलोकपुर प्रधागत भेलाह और सोन-बानीक गठरी श्रीमान् सहलोला बाबू की समर्पण करैत निज-निज निवास स्थान पर प्रस्थान कयलैन् । किंचित्नाचोपरान्त श्रीमान् सहलोला बाबू पुनः हड़पू सोनार की आज्ञान कय पांचो हजारक सोन-बानी गहना-मुद्रिया गदबाक हेतु बय देल । प्रत्येक समस्त गेठरी हस्तगत होइतहि हड़पू कुपहि नकां फूल छलाह और तहिछन तीं ताबड़ोइ कुशाक बाबू

कर-कारक फिहरिमे फिरोखान होइत लगाह । सन्ध्या समय सोनार राम मीनिक सकरैण तीं मोहन साहूक बोकाय पर पुनः प्रस्तुत भेलाह और कहय भयलौन्-मोहन साह । गलकटो बाबा गौनो हो शर्पाक अर्द्धांश सी हमरो सेवा नुयुपा करह बलू नहि सी बलू कान्हिये तोहर माल-घात सब फिहरा में जीतह बलू ।

मोहन साह-बय-बय क्या नाम है कि, वह चालवाजी अपने ही घर रहने दो । तुम से भी मुकबो का बाबा-बाबा मुक में है । मुन्हरि-सा क्या नाम है कि मैं भी पटक लन्द गिरिधारी थोड़े है जो रुपये को फोकट में फेकता फिरता है । इस बीदे में तो क्या नाम है कि मुले खुब ही पाटा कपी है । तुमलोय तो क्या नाम है कि राजदरबार के सांझी कुले अहरे । सेत-मेत मे क्या नाम है कि छट-मूठ छावि-छावि, कौब-कौब की झड़ी लगाते रहते रहोने । और ! जब तुम बर हो गये तो क्या नाम है कि को । ये पच्चीस रुपये अपने कोरे लिये से जो और क्या नाम है कि दुन पिपाते-हिसाते भी दो न्यारह हो जाव ।

मोहन साह तीं हड़पू हरचन्द हिलाय हिलाय हारि नानिर्लह, हड़य मे पिपनाय से बेवैन्ह जे येहि पच्चीसक अतिरिक्त एक कानी कीटियो आज नहि है, तखन सबस मारि पचोसो रुपया के भाकल नटुआ जकां कुटनी चिछैत क्या "थोरक घन छिपाड़े सार" बला फलकड़ा पड़ैत भकभक-लकजक करैत रहैत बाकि तीं स्टेशन पर पधारलैन् ।

ओहि निधिये मिथिक से सोन-बानी की नवाब-नलाय गाजी धियय लग-लाह । ओही रात्रिक कोच कया निवाहक दिनहु धरि सोन-बानी दुहेट-दाहैत अर्द्धांश चाटि लेख । जेचकालने जे किछु बहना तैयारी कयलैन्ह से कय क्षतिभूय कतेपरे जनय मांजि-गुजि फाविले कशाय बरियात बिदा होगवाक कालहि प्रस्तुत कय कहन लगलैन्-सरकार ! जेतैक कान-कनार पुनसी पर हू-तीनटा गहना तहिवे तैयार भे सकलैक, कारीगर सब के भागीने छी, तैयार करीये हुन खुब न्यार्ड काबये सरवसर नरकारक सेवामे समर्पण कय आवेय । ई कया गुनितहि सहलोला बाबू कोडे तमतम करैत सोनार रामक बिछिष्टाचारक अवस्था करवा पर उद्यत भेलाह । किन्तु, अन्तिम समयमे बरियाती लय जाय कि सोनार रामक अवस्था करय ।

बेशी टाका अगाउ निकल कय देल जाउक जे हमरूँ रकम पत्नी कीनि-बेसाहि कय मौजुद कयने रहै। तखन कि कहै छैक कि कम्मरौ सी कम्म एकरी हजार धरि निकास कय देल जाउक जे कि कहै छैक कि काम धन्दा चलेक।

प्रपंची-धम्मवितार ! जटूआ के आज पहिनुक विभव रहैक नहि जियकुल बौधि भेल किछु अगाउक आज्ञा कयने दय देल जाउक नहि तौ बिकारमे बड़े पिचाल पड़त। बरिपात के समय-सीधे धरि सरोकार रहैत छैक। भोजनमे बुद्धि भेलत तौ सय अनोते-विसनोते भेल रहत।

सहलोला बाबू-ही प्रपंची ! जाह तत्काल जटूआ के भोजानाथ बाबू सौ चौदह सय टाका देआय दइक हिसाब-किताब आंगी-पाछी कुलल-भुजल अवलोक।

प्रपंची-चलह हो जटू, चलह ! जाय तौ भेलोह। हमरा सरकार नन बुझनीक अवित बह्माचर भरिमे धिरलथके केओ भेटतौक। पुरवित स्वार्थताक बात कहैत-सुनैत निज प्रपंचमे जटू के जटैत भोजानाथबाबूक समक्ष प्रपंची गह्वरलह।

भोजानाथ बाबू-की हो प्रपंची की समाचार ?

प्रपंची-कृपानिधान ! जटू के पन्धर सय काँया बरिपातक भोजनी समतुल रखबाक हेतु सरकार सौ निकास भेलैक अछि।

भोजानाथ बाबू-बेत-बेत आहौँ सय कनेक बैसि जाउ, हम बोड़क नदी फिरने लहले चल अवैत छी।

अस्तु ! भोजानाथ बाबू तौ ओम्हर बाह्यभूमि गेलाह। एम्हर जटू के प्रपंची कुमुर-कुमुर कहइ लगलथोन्ह। जटू ! देखह तोहुरा हेतु हम कनेक चितण्डा कयबहुँ अछि हमरे होहकारका सौ तोहुरा बेतेक शैया सरकार देखबुन्ह अछि नहि तौ कदाश्ते मे कुलैत रहिहह। आज जर चौब हमरा दय देह तखन तौ 'ताना काना अन्न, पील मितायन आनक' बात करह।

जटू बनिबो-आए-आए विगाही पी आए ! जाह की कहै छैक कि बोहवहिमे अनुताब लगैत छी, हम तौ की कहै छैक कि अपनेक कया सौ कहियो कि कराक छी ? बड़े गुन गबैत छी अहाँक जाति भाइ तौ हमरो गुन

बिकारह तखन की कहै छैक कि कया तौ पहिने मोठिआवय बीय तखन की कहै छैक कि आगो मोनो बातचीत।

वही बम्भलारमे भोजानाथ बाबू अवैत बुद्धिगत भेलथोन्ह। हुनका बेसितहि दुहु गोट अपन-अपन पाछोलाय कें सदन-छोतराम हवाला कयलैन्ह। कुल-रायसमोषरान्तर भोजानाथ बाबू गड़ी पर बैसलाह और बोहोत सन्तुकबा सौ हूटा हजारी धोकड़ी बाहर कय सए हू सयवाक बीया बाक लगेलेनिहि किन्तु शैया देवाक बेरि बिस्मरणताक कारणे पन्धर बाणक स्थानमे सोलह पाक दय बाँकी नयस सन्तुकचाथे पुनः राखि छोड़लैन्ह। कयस सय के तीनी के बान्धि जटूओ अपन धरक रास्ता धयलैन्ह। हुनके पाछा-पाछी प्रपंचीपो डोरि-आएल गेलाह। एम्भप्रकारे हड्डु, गिरहकटू, जटू, चण्डकटू, पीनी-बसारी प्रभृति के दैत देखावैत सहलोला बाबू अन्त्या काय्यक प्रबन्ध करय लगलाह।

पाठक ! धरप्रद सहलोला बाबू की बय अपन कर्तव्य करय दिवौन्ह लखन कनेक कन्याप्रद मनोरथ लाभक प्रबन्ध तौ दैसि अवैत जाउ। बरिपातक-शोहरा मुनि-मुनि नाम श्री बड़े विचलित भै रहल छथि। ओही अवसर पर मोहन ठाकुर कहय लगलैन्ह "ओ बाबू ! खुद बरक बापे हमरा कहैत रहति जे बरिपाती हम तलेक लय जयबैन्ह जे मनोरथ लाभक लाभ (नाभि) येहि बेर सुलाय जयबैनिह। येहि बेरि तौ ओहो अपन माथक बोले कुलताह। से देखब जे अपना दिशि सौ कोनो बातक बातही नहि हो भेल प्रबन्ध करय जे ओहो येहि मावापुरी सौ नाके रंगीमे जाथि। यदि कोनो बातक टीटा होयत तौ बेस भरिमे हूँस्ती भय आइति।

पोबनक मर्मभेदी कथा तथा समर्पित अपमान जनिष व्यथा सौ कल्या-प्रदक चर्चाङ्ग फइकय लगलैन्ह कहि कारणे तत्काले मनमे सर्वस्वीन्तक धृक्कय कयलैन्ह। बस येही ऐंवा-तानी क नास्त्रान्यमे मनोरथ जी-नाम उगलि-उगलि विवाहक स्मारक पथ तैयार करय लगलाह तौ अपज्यक कोसो आभा-भरिचर नहि रखलैन्ह। स्मारक पथक जोड़ बारहो हजार सौ बाहर चल गेबैन्ह किन्तु पथक टाका ओलैन्ह कहाँ सौ तकरे ललबन्ती मयय लगलैन्ह। पर मयय ताकि-हेरि धयलह तौ धारि-धुरि कय मय-मयिक

टाका उठरलैन्ह। शीकी टाकाक उपाय की? ओएह—“कण ह्वा वृत्ते पिवेत्।”

अन्तु ! भास मित्रवियत-सेतवारी वे जहाँ छलैन्ह से सब केवाला भय-मूल कय बारह-बहस मुद्रा निरामा राउतक भाव आवा राउत सौ कण लेलैन्ह। लेद ! इस्तावेजक शरी राउती किछु न्युत नहि करीलैन्ह कये चाइ आकुरक शरी सी एकाध मोना देखिये। मुदा हस्तगत होइतहि अनोरम-लाम वडि नहि कय बिताहुक विलोबन्द करय लगलाह। बरक भलकुरणक हेतु एक डेह हजारक सोन-बाणी खरीद कय हुकषु सोनारक मस्तिजीत-भाय तस्कर आकुर की देख लेलैन्ह। दस दहेजक हेतु एक छि-हजार टाकाक सहित भक्तुलाम ठगकु ठठेरिक डोकान गेलाह। पत्ताबिक हेतु एक हजार बारह तब लपैया लय रसललाम गिरहकहु मलक भिन मोचन पयिवाहुक डोकान पर प्रस्थान कयल। खान-वानक विमिश्र एक बारि-तीष हजार टाका बड्ड, ताहुक नुनभाव पुतथड्ड, राव की देख लेलैन्ह। बरियातक गतवानाक हेतु स्वान-स्वान लौ राउती, कलस, खोलदारी, शीमा, बामिलाना, जखिम, सलरंजी, एकवित करवाक हेतु धोवक गण प्रेषित कयल गेल। लजज, शीरज, मुटुम्ब जग तथा मित्रजनक समर्थ निमंत्रण पत्र पठाओल गेल।

उचितवक्ता दान-हुहु समथी भेल एक मधतुल। विमिश्र विज्ञान कय कयल कल्ल। पाछा मूनव डूहक हाल। दर दर किराजह पिईस भाल ॥

पाठक ! उभयप्रद की कफड-दलाली करैत-करैत काल्पुण मुदि अतुईशी नुनबारी पहुँचि गेलैन्ह। आइये कुमार सोने-तालक कुमरम थिकैन्ह। श्रीमान् कह्लोलावाकुर सर कुटुम्ब वरधु-वानप्रथ यनै-यनैः एकवित भी रहल जयौन्ह। जेम्नरे खजरा देखैत श्री सैह जाइ-पीयर रंग-बिरंगक लस कहराय रहल अछि। सम्पादेवीक आगमन सौ पूर्व कुमरम काण वडै समारोहक सहित लगभग भेल। राति भरि खान-वानक डेलम-डेल रेलम-रेल मसैत रहल।

जाइ काल्पुषक सुवीत गुर्णमात्री कुमार सोनेतालक युव विवाहुक दिन बिकेन्ह प्रभातहि सौ-बरिवाल श्रस्थानक प्रबन्ध तथा बरिवाल भोजक डवल-पुवस एकी शास्त्रानुसार होवय लगल अछि। भक्ष्य, भोज्य, निद्रा, सोध्य,

अन्न, मधुर, तिक्त, कषाय, लावणिक आ मिष्ट पद-रस पदार्थ सौरभि लौ भोजनकलाक रसज रचना पयिछाय रहल छलैन्ह। सम्पूर्ण बहुबोतपुर हाथीक पिहकार, घोड़ाक ह्रिहिकार, डोल-डाकला-डाक-नाशाक, तबलडोअनि-वडधडो-अनि, तुरहो-पिपहरीक तुरतुरीअनि-पैपिओअनि, सहनारै बाधुरीक मिछि-बीअनि, लौरिपीनेड सेंभक (बेनक) कड़कौअनि-किकिजीअनि, कुम-मुम्पेटक गडगडाहटि बडधडाहटि सी पतयलित में रहल अछि। बारह बजैत-बजैत विज्ञौक बण्टा टोकल गेल। बण्टाक पननार कर्णपुटमे प्रवेश होइत अन्तर् बरिवाती-मकरवस्त्र स्थान पर उपलितत भै लधि-लधि मोम लगल निश्चित भेलाह। तदनंतर बरिवाल प्रोवेशनक (गमन) हेतु लपरंग मे रंगल, फेसन-मे-लिल, डवल-छवील सीन्धुअपीपासक नननुवक बरिवालीवम लीदिनाटि कय म्पेच्छागुवार बाहन के आगलाय रहलाह अछि। बरिवालीक स्वाङ्ग सब विधि सौ लधि-लधि कय भीमार सहलीला बाहुकै डेडो सौ बरिवाल कय साभक बेष गंगासागर तड़ाग पर किछु कावक हेतु एकाजित भेल तदनंतर सायापुरीक हेतु त्रिक-मांके (शीघ्र गमन) करय जागल।

बहुबोतपुर सी बहराइतहि कतीक नधीपासक तारपी (तारी) मुन्दरीक भाव करैत कम्पेन होइत आवा आग बड़ल जाइत छबि बीर स्थान स्थान पर उगत प्रमदा सँ बण्ड-प्रणाम करैत वरगोशक लैत पाती पच्छा के दान लगल दैत अटकारैत जाइत छबि। कतीक नवशिखित सम्बाभिमात्रीक ध्यान सौ केवल चितायत-वर्षसिरी बोलल-बाहिनी बारण्डी मुन्दरिहीक पाद पथमे लगल छैन्ह किन्तु वेहनि प्रमदान दर्शनक सीमाथ्य सर्वत्र सम्भव परम दुर्लभ स्वामि विशेष ध्यानुकष्ट भेल सहटल जाइत छबि। अन्तु ! अन्तिम सम्प्रदायक विशेष भाव मजित सौ आर्य भै स्वयंसेवक के मायापुरीक सनिकट कष-पास्यमे नधुपुरीक अनौरथ मन्दिरमे बजैत देखीहैन्ह। दर्शनक सीमाथ्य प्राप्ति होइतहि अपासक गण निज निज कर्म के तार्थक मानि हुनक आराधनक पीडनोपचार कयय लगैत गेल छबि ?

एक कहैत छथौन्ह—पित्वा पित्वा। दोसर—पुनः पित्वा।

तेसर—वाचस्पति न भूतेले।

चारिम-पुनस्तथा ।

पांचम-पुनः पित्वा ।

षष्ठम-यावज्जिवति भूतले ।

परन्तु उपासकक अधिकेष पोद्घोषाचार तथा अथर्द्धमायुधान् यौ युगल प्रमदा मुन्दरी अपसम्ता भे उभयोपासक के विक्षिप्त कल दैलचीन्हि । एततः युगल सम्प्रदाय परस्परहि धम्म क्षिप्त-क्षिप्तोपलि, टिका-टिकाजलि, गाल-जूता, मारि-मारि तथा ओकरेख-ओकरेत उपरोपत स्वातहि पर रजनी अवसान करेन निमेर नजामे निमग्न भेल छिटहीवत् टांग उठौने भूँह बोने प्रजाहीन पकल छथि । बरिवाली राम एखन पाछिह् छथीन्ह खोज पुछारी के करीन्हि ? विजहाय देखि स्थानीय स्थान की रहल नहि जाइत छेक वद्यपि ओ कोनो जान दवा-दाक नहि कम सकैत छैन्हि तथापि मुल सरोव पर सकल शिष्यव्यव हरि अवघे करैत छैन्हि । सब प्रांत मुलमे पड़ैतहि सर्वाङ्ग सुचयुगाय संगैत छैन्ह किन्तु टामहि पुनः सबमोड़ि भय पड़ि रहैत छथि ।

चतुर्थ परिच्छेद

क्याहे चाहे मुमति के मुमत बर हो ।

सूर्य देवक सप्त रंग रजित-सुरस्य-स्वर्ण किरण सौ आइ मायापुरी एक नमुपम छटा-सहस्रावय जागलि अछि । स्थान-स्थान पर चिन-चिचिनक अति मनोरम कितान (क्षान्तिमान्) विभिर, ठम्कू, कनाड, तम बरिवाली दलक स्वागतार्थ हस्तवद्ध ठाँफि भेल दृष्टिगत होइत अछि । नव-सन्त-सज्जित युवक नृप रमणी विवाहोपलव पर सपथ बहकैत बेसि पड़ैत छथि । मायापुरीक छविक झाँकी दर्शनक हेतु ऋतुराज बसन्तो उत्तम्य उत्तरि जागल छथि । बिनक स्वागतार्थ कुमुप-मानसादि स्थान-स्थान पर भाँति-भाँतिक मुनम-मय्या मजने प्रस्तुत छथि । ऋतुराजक प्रधान अर्चनेनी कोकिल रताथक उच्च-उच्च

मारि पर बेसि-बैसि कुह-कुह शब्दमे ऋतुराजागमनक घोषण घोषित कय रहलाह अछि । अकृति मालिनिगी धेन नञ्जोरा मे नाना प्रकारक मुगधित मुगन सजने छथि । मुनम नीरभि नौ रजजनन मरोन्मत्त भे रहलाह अछि । गदमत्त मधुकरावलिबो महराय महराय झुमि-झुमि नव विचलित मञ्जु, मञ्जरक मकरन्द कौ पान करवा लय जालावित पै रहल छथि । बाहा ! मायापुरी मे आइ वसन्तोत्सव तथा विवाहोत्सवक कारणे घर-घर स्थान-स्थान मे हलचल मचल देखि पड़ैत अछि । वसन्त रंग-रागिनीक मनोर कर्णपुट होइत हृदय कमल के विकसित कय रहल छथि । स्थान-स्थान पर अतर-गुलब-कुलकुल, मेवारीक धमधर मधि रहल अछि । विशेष-विशेष स्थान पर बाराङ्गना पञ्चम सुर मे "बाबू बेले होरी कन्हैया घर चलूरी" मत गारो पिचकारी ललन नुम" कावून जइँ वटूरी फिरि आईँ" जालापि रहलि अछि । आगी बड़ि कम देखैत सुनैत छी जे एक कुटीर पर चिरोनी जनक मण्डली उक्त आलापक प्रत्युत्तरमे मृदङ्ग मञ्जीरा नीं शिख्याम् विक्रान्त, किन्लो किन्लोके, अमि उक्थारल कय रहलि अछि । सार्वकालमे देखैत छी जे बरिवात समारोहक प्रसंगा सुधि सुनि गगन मण्डलक सम्राट बन्देनो प्राची दिशि सौ बन्द-बन्द बिहुरैत बाहर भेल चल अवैत छथि किन्तु मायापुरीमे बरिवाती दलक कतहु नामोनिशान नहि । मायापुरी विवाही के वरिवातीक प्रतीक्षा करैत-करैत अद्वैतादि बीति मेलेन्ह । परन्तु बेसि कार्ये विलम्बनक कारणे कन्याग्रव के छष-छगमे चिन्ताक मात्रा बढ्य लगनेन्ह ओहि समयमे कोनो एक प्रत्यागत पथिक कह्य लगलैन्ह "बिछु वरिवातीके हम मञ्जनपुरक गाछीमे घोड़िवत् भिक्षिण्ड भेल पडल देखल अछि, जइँ हमक जवरि जियोन्ह बहि तौ हुनका समक रंग रंग सौ येहव बूति पड़ैत अछि जे जाँद आयः चिवाहे नहि भे सकल । एतना कथा सुनैत रातां कन्यागत् नेहान तथा सनाथ दास के पाँच सात व्यक्तिक सहित मञ्जनपुर पड़ीनेन्ह । इहो सब अनुष्ठाने नीर गति सौ गमन करैत मञ्जनपुरक गाछी पहुँचलाह तौ देखैत छथि जे मधमत्त व्यक्तिक सब के बहूबोल निधि मञ्जन तथा हुरियादि रहल छनीन्ह । तथापि मधमत्त सब उठैत नहि छैन्ह । ओही समयमे सनाथदास कह्य जागल छथीन्ह "समधीनी एतहि दूर अवया माय अपने नमहि एतेक

विलम्ब लगाय बेल लादू पर एसन किञ्चिद्दित लगले छति, विवाहक सुन लगन
जगन चीत जाएत तखन कुलम्ब मे विवाहे कोना नै सकत । आवहु शीघ्रतर
अवसर भेल जाय । समाधदासक परमोचित कथा सुनि धीमाजू झल्लोवा
बाबू कहय लागल छथीन्ह "समधीवी ! कोन कथा कहू, मछयेतीक धर्ये
एहने एहने, हिनके सभक पंच ये हमहू पड़ि बेल छी अहि हउए एतेक विलम्ब
नै गेल अछि । वास्तविक राति डरल जाइत अछि सवा कथल जाय । अपने-
होक संगहि संग हमहू सभ नर्तत छी । हौ बहुतो ! नगराची, मराजची,
बोमारची सब के नाचघान होय कइत । हुकुम होइतनि नगराची नगपारामे
बोट देवन लागल । कूचक सूचना सुनिताहि नाछीमे पोहपोह मन्च लगल
और शीघ्रहि कालमे अतोर-तोर करैत बरिमाती दल भावापुरी पहुँचल ।
बरिमातीमण तस्फाले चलबल जाति बरिमातीक स्वागतार्थ अखर भेलाह और
शीघ्रतम परीछि-पुरीछि कय कन्वाप्रदक हाथ पर बय अयलाह । अहा ! की
जपुर्ब सोमा ! कन्वाप्रदक सिंहद्वार दिनि दृष्टिपात होइतहि देखि पड़ल जे
वर्ण-वर्णक भूषण कतत विभूषिता विधुचवनी, केहरि-कटि-मचमान विमोचिनी
शोभागिनी शूभाङ्गना गण सावा विधिक मङ्गल आरती, किन्तु किशलय
नयुक्त कलशा सँ सुवज्जित कयने तथा मृदुल मनोहर मंगल गान सौ कत-
कल केँ अवबैत वरक परिछनक निमित्त प्रस्तुत छथि । ओही सुअवसर पर
साह प्रमृति वैवाहिक वस्त्रा-भूषण विभूषित, मीर-मण्डित दूल्हा केँ प्रथम पाद
मे बन्धने हाथो-हाथ धरने अवैत छथीन्ह । सिंहद्वार पर पदार्पण करितहि
विधिकरी बरकेँ, परिछि प्राङ्गण प्रवेश कराबय जावलि छथिन्ह ।
प्राङ्गण प्रवेशान्तर बेर विहित कुल व्यवहारानुसार, पावित्र्यह्न परिचया
मुक्तास्त्रमे शरम्भ भेल । विवाह विधि सम्पन्न होइत-होइत पीहू फाति गेल
तत्पर बरिमाती-बरिमाती गन केँ भोजनार्थ निवेदन करैत शरगोटिया देवन
लागल छथीन्ह । बहुलोक विचारवान व्यक्ति सहजानुगतक तालिमक
आमान देखि-देखि भोरक भोजन पर निषेध करैत अवश्छुक्ता प्रगट करय
लगलथीन्ह किन्तु बहुलोक राति गरिक धूआ पिपासा सँ शिथिलाएन सट सभ
पापी पेट केँ क्षमन करबाक निमित्त भोजनोन्मुखा भेलाह । अस्तु ! अन्तिमा-

शिकारी केँ अशनायन एक जेस मुनहर पर मध्य हेत गईन्ह । नीलि-नीलिक
नीच्य पदार्थ पात्र मे पड़ल लागल । भोजनक कचर-कूट धुब भै रहल अछि ।
बाहुर सँ बीजा कांच-कांच करैत कुसमयक भोजन पर निषेध कय रहलन्ह
अछि तथापि भोजनक डबन-डबन कयक-कयक आवा कोआक कोन कथा ।
बाहुर मे जे नीच वर्णक बरिमाती भोजन करैत अछि तकर कय कोन कहू शी
रम तँ अपन-अपन विद्यात अवज्ञा रूपी उदर मे नाता विधिक भोज्य
पदार्थ केँ तहिभाव-तहिभाव हुनि रहल अछि और परबनिहार केँ नाकों
इम कथने छैन्ह जाहि सँ सोमभक्ति कोआन्ध भै एकैक पाद मे
बारि-बारि व्यक्तिक भोज्य उल्लिख लागल छथि । बेहि जौकोजलि सौ गृह-
पतिक नामही बन्म वज्जा पर आधिन भै गेल छैन्ह । फलतः मनोरथ लागक
गति-वर्तित विवाहा उल्लङ्घ पर उल्लत छैन्ह । सतमानक सुखमगल पर
विनाक रेल देखितहि सुमनाका पुरहित जी कहय लागल छथीन्ह "अपने नभ
केँ नहुपोलपनहीक कारणे कूच-कलापमे विलपक सम्भवता भै जाइत अछि
एतत यदि हुनर वमनांतिक आश्चय नहि लेब तँ देवभरि हँसौ नै जाइत ।
एतत शीकोजलिक प्रचल केँ भूषक बन जनु । शर्यादिक भोजनक निमित्त नीच
वर्णक बरिमाती केँ दुहु मन्त्राक सीधा एवकेँ डाम शीलवाय दिपौक तहि तौ
कहौ किहु सरज्जाम अवशेष अछि तकरो ई सभ दिटिश्ये कला काटि जाएत ।
भुवन आक तुमंगना सौ निरास हूयन जे आखक सञ्चार होचय लगलन्ह
तखन सँ दबैक कार्य पुरहितक आदेशानुसार करय लगलाह । अग्रान्ह समय
मे सख्यादातर पुनः बरिमाती दल भोजनाशन भेलाह । भोज्य सामग्रीक
भई-भई मचि गेल । बरिमाती गण केँ यथपि पूर्वकृत-भोजन सँ उदर लफले
छैन्ह तथापि पट-रस पचवानक तालचवसात दुधीउल्लिक कोनो आभा परिचय
नहि राबैत गेलाह अछि । बेहि कुनमक नाचैँ नाक भोजनक पथक फल
बसात जाइत अछि जे बरिमातीमण मे ककरो पेट फुलल जाइत छैन्ह, ककरो
पेट सौ निरास पानिये बहल जाइत छैन्ह । कलक पैदु मयुरिया-पन्था भै
भोगिपट पड़ल छथि, कलोक पांचकल गेवन जीवन सौ कय रहल छथि ।
कय दूजक वर्णन कइतैँ तक कइ एक दोसर अस्पताकेँ बोध होइत अछि ।

कतोक परहेजी पुरुष क्षण्ण्वाकुल व्यनितक विज्ञाता करय लागल छथीन्ह ।
बहुनीक ती अनि लीला तथा मूर्धोपवेशनहीक प्रबन्धमे हैरान राय रहल
छथि । अस्तु ! रात्रिक आठ ती बदैत-बदैत अगिनीलका यनिका घर-
हर करैत करैत पसरि रहल अछि और लीलाक पाव-पापी, गट-गटी
अपत्ति महापापी, चिताबी, गुलाबी, कुलछाही, लोभी, कयम्ब, पेदार,
वमनोत्ता नगै साँव-साँव, काँव-काँव, छर-छर, फटफुट, गटगट अङ्गामपुडम
करैत रात्रि की दिग बनाय रहल अछि । तत्पश्चात् नाट्य लीलाक द्वितीय
चरित्रकाक उद्धान मे देखल जे एक भूषधार दाहीवार, मिया घोषिहार तखुरा
सँ कलैती देत 'मैआब मैआब' कयूरहुल छथि । हुनका पोछे अत्यान्व समाजीमण
स्वैव साज बाज अछि नबला, सरंगी, सितार, इसराज, मञ्जीरा, मुरचाङ्क,
मंगताल, पर हाथ धरने चिरकित-चिरकित छि, नाना री री डा, डिनि-डारा,
तुक्का-तुक्का तुम-तुम ठरर-ठरक करैत-करैत सारिगमक जमक दय रहलाह
अछि । नेपथ्य नदी ती लूपधारक नाना नानी सँ लाल-लाला मे रवाना करय
लायल छैन्ह । ओहि अवसर पर हाथ-कुन्ध एक विदूषक (विपदा) अपन
बखस्य गेट हिलारन हाँड लचकारैत आनि अलकनारा और निज कौतुक-बीज-
झाती सँ दलैत मणसी सँ मोट-मोट कय रहल छथि, हुनक हाथ बार्ता ती
बदा रङ्ग-रङ्गि कय चिलखिला उठैत अछि । उक्त उलय (बखस्य) मे दर्शक
मन चुरचुर भै रहल छथि । अन्त-पुरहु मे कुलधरि लोकनि सम्बन्धक
लगरानहि सौ लाला प्रकारक बीजनक विधान पाकलवानुसार करय
लायल छथि । घामिनीक भुशभाम चितला पर देखैत छी जे कन्यादत्त एक लघु
मन्त्रीक वरियाती दलक अधिपतिज समक्ष पाककर्ता तथा सम्बन्धीक निर्वाचनक
निमित्त उपस्थित भेल अछि और सम्बन्धी ताकि-ताकि कय स्वयं
परिजन, कुटुम्बजन सँ उपस्थित भलाह बिचारार्थ सुनिब करय लयलाह ती
कैसी उनीदवने कन्या पर पड़ल नासिका हार सौ दीप दवाज क्षिप्रत-क्षिप्रत
कुल सौ कुल-कुल कय रहल छथिन्ह । कतोक कुम्भकरनी, कतोक मुषकुन्दी,
कतोक ती हरिनी पिछा मे आनि निहारने शीघ्र कटि रहल छथीन्ह । कतोक
उपस-पाकल-छटपट करैत देनि पड़ैत छथीन्ह अस्तु ! अति कठिनता सौ शेषमे

तम की एकचित्त कयल । तबन उपत मणसी श्रीमान् सहलीला बाबू सौ
पाककर्ता तथा द्विभक्ति समधीक निर्वाचनक निमित्त निवेदन कयलथीन्ह
ताहि पर वरपद एक कोसो स्थानीय सम्बन्धी सँ पाककर्ता नियुक्त कयल
किन्तु सम्बन्धीक वकील संध्या पर अर्कोच दशकित कह्य लागल छथीन्ह
“हमरा कुलक जदम नियम “अछि जे जतवा दीवाद तथा मातृपूजक व्यक्ति
वरिष्ठत जाइ से तम समधीक आशन ग्रहण करी और उचित सम्मान सौ
सम्मानित होइ ।” कन्याप्रदक मणसी कलैत छथीन्ह जे हमरा लोकनि
स्वजातीय कुम्भीक अन्तर्गत एक अन्तराला स्वेच्छया निर्माण कयल अछि
जकर नियमावली मे जाबज भै केवल द्विभक्ति अर्थात् उभय पक्षक एक-एक
मुख्य व्यक्ति सँ समधीक आशन पर आसीन करैत छथीन्ह तथा आशीनी
होइत छी । एकर प्रत्युत्तर मे वरपद कह्य लागल छथीन्ह “हमरा तमक
प्राचीन निवमानसी वाधित करैत अछि जे उभय कुलक जेतेक व्यक्ति वरि-
ष्ठता आधि वा जाबधि ते तम समधीक आशन अवरो ग्रहण करथि वा
करावथि । बेहि मन्त्रवेदताक कारणे बादानुवादक एक लङ्काकाण्ड उपस्थित
भै गेल, युगल दल अपन अपन पक्षक पहाइ भै जाइत गेलाह । कर्षताक मात्रा
सम-अन छितराय लगल । उभय पक्षक ऐचा-नानीक उत्कर्षताक कारणे
घामिनियों अगन्तुष्टा भै निज घोषट गट उतारि अन्त-पुरमे प्रवेशकय गेलीह ।
बेहि अन्यमनकता तथा अलोत्तानताक कारणे वरियातीमण अवगत-करैत
कन्यागतक भवन सौ विमुख भेलाह । अन्यमनकताक कारणे रंगमे भंग भै गेल ।
कन्यागतक भवनमे मम्म गय्य लायल अन्त-पुर ती प्रायः कयकैयीक कोप
भनने भान् होल्य लागल । उपरोक्त विषमता सौ विस्मित जे कन्याप्रद
नाथ पर हाथ धरने आश्रम सँ कोसल दिलाप करय लागल छथि “हे
कुम्भे ! पूर्वहि यदि हमरा जानि पड़ैत जे कुम्भीमे कुमतिमे भरल छैत ती
गैहति कुम्भीके दूरहि सौ दण्डक करितहुँ जाय ती हमर कयल-अपय
नय कयल जे पथ गेल । बेद ! आज ती हमरा साँप-छुकुन्चिक दया
भै गेलि । एभर कन्यागतक ई दश ! ओमहर वराजल बेचारे सटपट सौ
चटपट होइत बेद सौ गिनल बेद सौ गिनल भेल अण कयने जाइत छथि जे
सानीचन आज येहन कुम्भी-उपासकक ओहिठाम पुनः विवाह-दायक बर्ष

नहि करताह। चाट-चाटमे जे-जे राहो-कटोही बरिवातीक मुख सौ भविष्यतीक क्षिप्राचरक समाचार सुनैत अछि से हूँ बारि सङ्ग गलत कुबान्च कया कहय समैत छैन्ह। कन्यागतक भवन परित्यक्तक काल मे ती मज्जीक मधुबनक उतेजित भै भै अपन सम्मति प्रकाश करैत लगलचीन्ह जे करहु के संगहि लेने चलिगीन्ह। ताहि पर कतोक विचारशील बूढ़ व्यक्ति विचारण करैत छथीन्ह जे ई बात परम अनुचित होइति। येहि मध्य घर-कन्याक कोन होय छैक। यदि अपने सभहीक सेहने विचार अछि सौ विज्ञाहूँ काण्डक चतुर्बांस अर्थात् चतुर्थी समाप्त होइतहि घर के भङ्गवाय लेवैन्ह। सुमन प्रस्तावक मध्य जे शोमान सहस्रीला कय अन्तर्द्वेष तथा संकल्प विकल्प मे पड़ि गेलाहूँ कथामि सुतवत्स-लताक यथे वेह दुर्दशा पर विधि चतुर्थीक निमित्त हिरण्य टाकाक सङ्गित नहि, छिपातु खाना के मनोरञ्ज लानक द्वार पर छोड़ि चलताह। रत्नाभास-अप-मानक वार्ता सुनि-सुनि दुख भोगलाल कोकरा घर के परित्याग करवाक हेतु आफन तोड़य लगलाह किन्तु रहस्य भक्तोदा-प्रहरी-तापिकामण हुनका प्रथम पास सौ देखै सकइ बंध कथमे छैन्ह जे टप्पस सौ चरन करवाक धक्कासे नहि भेटंग छैन्ह। जेद ! पराधीन बेचारे घर करवे की करताह, निराशरी भै केना-केना चतुर्थीक चिन अछि दिन छटावैन्ह। चतुर्थीक प्रातहि असम्भ-मसुर की परित्याग कय चलताह। सकल जमाय के बौगवाक हेतु समुदयी पाछा-पाछा दस गज्ज प्रति देखै तथा दस गौन सोढ मार दौर पडाय देलचीन्ह।

पाठक ! सहस्रीला वातु अपराधर सन्तर्पक विज्ञाहूँ दालमे विशेष दान रहैत तथा आदर सम्कार सौ अति सम्मानित भैल छथि किन्तु अस्मितात्मक विज्ञाहूँ नव्य कुमैटी-सेवक समझी सौ अति अपमानित होवक पड़ैन्ह अछि।

उचितवक्ता दाम-धिय पाठक ! "जैते-जैते न मारिकय सौचितक न मजे-मजे, साधवो नहि मज्जेय चरन न बने बने।" श्री स्वच्छाचारी कुमैटीक उपासक गण। अन्यन्य कर्तव्याकर्तव्य मध्य अपने सभहि आँखुरेक-आँखुर खंखा छिरिआवैत श्री, बुद्धविधुत गृहागत अतिथि अन्वगतक सेवा सम्मान दया

विभव ती करितहि होयबैक किन्तु मान्यवर ! ताहमे निर्मानित तथा गृहागत समधि पर येहनि कष्टता तथा संकीर्णता किवैक ? घन्य अपनेक विचार जोर घन्या अपनेक कुमैटी।

एक कुमैटीक उपासक-उचितवक्ता दाम जी ! अपनेक वक्तव्य उचित किन्तु साम्प्रतिक दीनहीनावस्थाक कारणे हम सभ बहु-विधि-अवधार ती करगुल विवाहादि किवा-कलापक विपुल अपव्यय सौ बाण पयवाक हेतु तथा नौकली बहु-विधि व्यवहारादिक सौ वैशवाक हेतु समबानुसार संशोधन (रिकीरमेचन) करवा पर गम्य छ भेलहुँ अछि। किन्तु हमरा नमाज के सुनबो-गधि ओहिवां नहि सोहारात छैक अहिनां कालबिल अवानि के भेषज। अतएव हमरा मनक साम्प्रतिक दशा "धर्म सेनेह उजय मति पेरी। भइ नलि सौं छुट्टादीर केरी" बरितावे भै जेल अछि। किन्तु पावकाल हमरहु नम के कुमैटी घण्टादण्ड (घोडित) नहि कयने छल अर्थात् दीक्षा नहि देने छनि तैवस्थान हमरहु नौकनि आगनुक बरिवातीक आगत-स्वागत सेवा-सम्मान विजेष रूपे करैत छलहुँ, दयावद्दक घर-धरने बरिवातक भोजन छाजनक चिन्तास विजेष विधि सौ होइत छलैन्ह। अब सम्वादक दिन ती तनेक रेलगेल मसैत छल जे बरिवाती लोकनि के स्वधर्म-बरिवाती समाजक प्रतिपदमे पेट-पूजा करक पड़ैन्ह और नर-विशद सेवा-सम्मानक ती द्राष्टे नहि वादन्हि। हम अपना गमक याकोन आदर-सम्मान-गह्वाराक माका कहीं तक छरि देलाह। यदि हमरा सभस्य पूर्व लोच तथा लौकिक व्यवहारादिकक कलवक (चिन्ताधारक) अवलोकनक दृष्टा हो ती राम-लक्ष्मण, भरत-जन्म, सीता-श्रुतिकीर्ति, माण्डवी, उर्मिलाक विवाहोत्सव पर महाराज किरियेय जनक तथा महाराज अवधेश दशम्वक कारस्थरिक मिलन सम्मान, भगवत-विनयक कीटो (चिन्तादूषण) रामायण समी लेल (छायावाहक शीघा) द्वारा दुदण्ड (वेद) पर छायाग्रहण कय देल-

मित नूतन आदर अधिकारी। दिन प्रति सहस्रभाति पढ़नाई ॥

मित नम मकर अनन्त उछाह। दशरथ गगन मुहाय न काह ॥

पञ्चम परिच्छेद

परिणाम

जेहन काम तेहन परिणाम ।

'यथा करोति कर्मणि तथैव फलमस्तुते'

पाठक ! केवल विवाह दाने सौ स्वाच्छन्न नहि किन्तु विवाह सौ विधि भारीक कथा कर्मयोग्यरे होयत । विवाहोत्तर साली भरि, नहि-नहि साले भरि कियेक ओहू सौ उर्बे अर्थात् ई कहू जे यावत्धरि द्विरागमन काण्डक इस्वीखी नहि भेलि रहैत छैन्हि तावत्काल उभयपक्ष सौ कोबागरा, पुछारी, पञ्चाम्नि, बट्नाबिबी, मधुखायबी तथा तुपारी अतागमनक समय धरि विपुल व्ययक उतास तान तरङ्गमे उबड़ुन होबैक पड़ैत छैन्ह । उभयपक्ष विवाह तनावनी सनासनीक साम्राज्यमे सहकि-सहकि तीव्रण तकथारि फेरि-फेरि धनान्त कय छोड़ैत गेल छथि किन्तु विवाह सौ विधि भारीक दखिवाक दोसर उपाय कोन ? पुनः उर्थह "च्छर्ण कृत्वा नूतं पिबेत् ।"

गाल शेष भै गेलैन्ह अछि । कायदाका गण दूह खगडी पर खण परिशोधनक तकाजा पर तकाजा करैत-करैत अरियाय गेल । परिशोधनमे केवल ढाल मटोल होबैक लगलैक तयन ओ मय धडाघड़ि भोकदमा दामय लकलैन्ह और मोकदमाक परबी जो शान भौ करय लागल अछि । एक कं देखैत छियैन्ह जे ताजिरक तजरिमे हाजिर सौ दोसर प्यादाक पांवडीजीमे पड़ल छथि । तेसर निशान देहिन्दाक छिकिरिमे छिरैत, चारिम सौ मुदातहू कं सोकरैरेमे पकड़वाक चेष्टामे निष्ठा कयने छथि ।

वारन्टक छिपाहीक नाम मुनियहि सहलोला बाबू छोह कदने बुरैत छथि, आज्ञन सौ बहुरथी करताहू से परम भयावह भै रहल छैन्ह । डर सौ श्रोतिपहि वय नदी-लघी, परित्याग होइत छैन्ह । प्रवीण प्यादो प्रभृति पकड़वाक प्रयत्न मे पड़ल भेय बजलि-बजलि, नूकि-नूकि, छिपि-छिपि घात मे

पुसि चलेन्ह अछि । सहलोला बाबू वारन्टक भय सौ तेहन सेद किम्ब सै गेल छथि जे क्षण-क्षण मे दांती पर दांती, मुहुरत-मुहुरत मे मुच्छा होइत छैन्ह ।

विभ्रमावस्था मे बेहाय-बेहाय उठैत छथि और अपट-अपट अरै-बरै बजैत बेटा खभ पर वाजक लगैत छथि "हाय लाल हीरा, भोती, जवाहरि, सोम ! जहाँ मभके" अछैते हमर ई दशा ? बचाव-बचाव, हटाव-हटाव, नहि तौ खयलक-पकड़लक कहैत पुनः मुच्छागत भै गेलाह । ओही अभ्यन्तर मे पोस्ट पिऊन (डाकिवा) एक पत्र दय गेलैन्ह जाहिमे लोमहर्षन लाल तम्बादवाला लिखैत छथि जे आहूँक फलाँ माय, चिल्लाँ सेत, अमुक तारीखमे कम किरादो कय्य निलाय गेल प्रायः २६ दिनक अवधियो अन्यान भै गेल अछि, ओहि दिन अहूँक पैरवीकारी आकाशक-कुमुने छलाह । खेद ! सहलोला बाबू केन्बरहि तनैत छथि तेम्बरहि सौ विपत्तिक पहाड़ बहुराहत देखि पड़ैत छैन्ह एवंप्रकारे तीन वर्षाभ्यन्तरे मध्य हुनक सकल सम्पदाक इतिश्री भै गेलैन्ह । लोक सन्तापक विषय ज्वर सौ संतप्त भै सहलोला बाबू जाहूँ अपनहुँ येहि दुःखमय संसारक शराधाम कें परित्याग करैत नाया जालक कलेवर बदलैत छथि ।

हा शोक ! अपार अपव्यय तथा सहलोलापनक संचार सौ उक्त परिवार देखले दिनमे लुप्तप्राय भै गेल । येहि परिवारमे आब केवल जवाहरिलास तथा पेहि उपन्यासक नायक सोनेवाल बाँचि रहल छथि । दिनको समय कं जहाँमाये उपवास पर उपवास करैत-करैत पेठमे गेठनि पर ऐठनि पड़ब लग-बैन्हि अछि । युगल भ्राता सुधा सौ व्याकुल भै यदि पितृ-परिपालित आप-स्वामी तर कुटुम्बक शरणापन्नी होइत छथि तौ ओहिठाम सौ केवल दुःख-दुर्गति पदनाइयै लूपि कें विमुख होबैक पड़ैत छैन्ह, जहि सौ दिनका सकल हृदयाकाश मे जहनिने दुःखहीक घनघटा आच्छादित कयने तथा तेज नलिनमे श्रुत्ये प्रवेश कयने रहैत छैन्ह । युगल भ्राताक विदामावस्था देखि-देखि दीनदयालु दीनानाथ दत्त जमीन्दार पाँच टाकाक मासिक बैतन पर पटनारिकी बुद्धि मित्र-वेला मध्य अनुग्रह कयलपीन्हि अछि । जेही स्वस्थाय सौ बेचाये

जवाहरलाल कोनो अगाने परिवारक भरण-पोषण करय लगेलाह, परन्तु अर्धोपार्थ सहोदर सोमेलाल सामुरक द्वितीयः पांचा अर्धोपार्थ गहि कय सकल-धीन्ह अछि । जकर पगलू चित्ताक औच सतन् सताय रहनेन्ह अछि । मैहि लोक राधा मे कमो गी कम ती वुय जवाह बय सौया लचनेन्ह । परमोकर चित्तक पुत्र धिकाह । विश्व-ज्येष्ठद्वारावि मे स्तुतता कोबा करताह आइये लोक हूँमि मारनेन्ह तै अहूँ दीन-हीनाबन्धामे मालिक महानुभाव सौ हि सय मुदा कृष्ण तब अनुजके सामुर बिदा क्यलैन्ह अछि । सामुरक टिटकार सौ सोमेलाल सातहि दिनमे सय सौया कूक-काकि कय घर जन अमलनीन्ह ।

पाठक ! वरपक्षक दानवीला देखि लेल । आब कनेक कल्याणसुखक मान-लीलामे मनमग्न होत । हजर पूर्व परिचित कृष्णदेव साहुक कृष्ण परिशोधनक बाटा-बाटी तर्क-तर्कीत सगौ बीरि मेलेन्ह । किन्तु मनोरथ सय सौ अर्धोपार्थ अनेछ देखि अदालत मे मोकदमा बाहर कय बीसो-पचीसो विग्रह माथ मुण्ठमे ड्राथ लगाल लेलकैन्ह । येम्भर विपुल प्रवाद मालिकक दरबारमे विवाहजनक विपुल व्यवक अभिवोग लगौलनीन्ह जाहि घर मनेजर साहेब मौजेक कामलतक (मालिक) आशा पाव कयल । उल्लोच ठाकुर बंसलातक हेतु मौजे पर पहुँचलाह और बम्भ-बम्भेडा करय लगलाह किन्तु बीवानजी के अरेव देखि अक्षुण्ण मे कर्मचारी सौ साधय लगलाह जाहि सौ बीवानजीक छपर एक पाँच-नात सय साएन लसाय लेवानतक मोकदमा मजिस्टर साहेबक इजलास मे दाखर करीलेन्ह ।

मोकदमाक सप्रथमे मालिकक तरफ सौ अधकट्टी रसीद स्वाहा बलान इत्यादि दाखिल कयल गेल । रसीद अधकट्टी के मिलाव कयला सौ विदित होइत अछि जे जानू जोलहा चित्ताक जिकदमे जनील अपावारक अधकट्टीमे १०) दर्ब ती ओकरा रसीद मे १००) लिखल देखल जाइत अछि । मिट्टु मियाँक अधकट्टी मे १६) ती ओकरा रसीदमे १६०) दर्ब । ठगवा रंगदेवक अधकट्टी मे २०) ती रसीद मे २०) दर्ब किन्तु अफर मे बीसो लिखल छैक । जलवा गहेरिक अधकट्टी मे ७) सात ती रसीद मे ६७) सातसठि लिखल ।

हुमेती हजामक अधकट्टी मे २०) ती रसीद मे २०) दर्ब । एषम्भकारि सौ वि-गुमि के पाँच सात साएक खेवानत साचित कयल गेलैन्ह ।

खेवानत साचित भेला पर मजिस्टर साहेब बाबै देवाक सनस मनोरथ लाभ सौ पुछल छलीन्ह "वेल मेनस्ट लाभ ! दोन इटना कती लेख-लौख (मालिक) का कथी किपालकेट (अपहरण) कियौ ?

मनोरथ लाभ-हुनूर ! जानबूझके मैने मालिक के मालबुजारी को किसी तरह से धमकीक नहीं किया है । मालिक के कल के मुताबिक पटवारी के पास तहवील खम्बा नहीं जाता । तहवीलों रुपये सभ रिजाल होने-होने के कबल तक जेठरयत के पास अभा रहता है । मैं तो केवल लिखती दाख हूँ । रसत के रसीद का हाल तो जाने रसत या जेठरयत । मैं तो केवल अधकट्टी वाले रुपये को जखनता । निवान इसके हुनूर यह भी गौर परसगौमे कि मेरे घर में बीसों आदमी हैं जिनका खान-पोषण करने वाला एकमात्र मैं ही हूँ । हुनूर लोग भी अपने सानसाम, बाजरी, बैरा, बोड़ को कार-पण्डह रुपये मे काम तो मोशहुरा न देते होंगे, लेकिन हम बेचारे पटवारियों को तो तीन, पाँच, सात के दिवाय मोशहुरा पाता कथी भी भ्रष्टाचार नहीं होता । अलावा इसके आजकल के रेखाय मे तो तीन, पाँच रुपये में एक आदमी ही भी गुजारा दुम्भार है ? अब वहाँ बीसों आदमियों का परवरिश करना है नहीं तीन, सात का पितरा ही क्या है । हम पटवारियों को कुछ मालीक ही तो काम मोशहुरा देदेकर अपहरण प्रति का पय प्रदर्शक होता है । वही जदामे में मोशहुरा के अलावा दण-पाँच जिगहा खेतवारी भी परवरिश के लिये मालिक देता था । लेकिन, आजकल तो "दाना, चाख नदरय अइहरा दोनों शाय" की बात हो रही है । ऐसी हालत में अगर रहमर्दिल रेखाय हम बेचारे पटवारियों पर झहरवाती न करती होती तो हम पटवारी लोग पटवारिकी के नाम चुनते ही मीनू आ की बिल्की हो गये रहते । हुनूर खून कयाल करमा के सामिन्नी करेने कि ऐसी-ऐसी खान-पोषा सिर्फ हम पटवारियों ही से नहीं हुवा करती है । बल्के मालिक के

बहुते बहुतकारों ही के अकलमन्दी से होती है, तब रहा "हतुभा पूड़ी बीवी आय, कोत भरन की बान्दी जाय ।"

येहि पर मुर्दक मुखतार बसीटा शहनी कह्य लगनथीन्ह, बस-बस तुम मे जाती जोनहा, भिट्ठु मियाँ, लाला लहेर की रसीय की देखो—जो कि तुम्हारे ही जिलाबद और दस्तखत में है, अब कहो कि तुमने तो इन समयों को तमल्लुछ तसरक किया। फिर भी तो तुमने इन तसरकाली समयों के लिये तमस्तुक लिखवा लेने के लिये मनेजर साहेब से अमानी राजत जेठरपत के सामने अर्ज किया था न ?

मजिस्टर साहेब—देत (तब) बस टोमार के कहने से सेल्फ-कनफेशन (स्वयं स्वीकार) होवा हाय इस कास्टे हाय डोक की सेवान (दौरा) डेडा हाय ।

मनोरथ लाभ—हजुर हाकिम है जो कुछ करे तो सब अलतियार है लेकिन इस मोकदमे में कुछ भी भेरा फलूर नहीं है ।

पेशकार—सिपाही ! इसकी जेलर नाबू (कारागारप्रतिनिधि) के पास जेल में डेल आव ।

दौराक देवल मे दिवानजीक दलील सौ दया किछु अवश्य देखाजोख गेलैन्हि किन्तु दलीलदार खरिफाले गेलाह ।

कारावालाक अभ्यन्तर मे दिवानजीक तनय सौ आशा राखत खूज परि-सोधनार्थ तफाजा पर तकाजा करैत-करैत थाकि जेल किन्तु परिशोधनक निराशा देलि जेय मे नारव प्रसाद बनीलक परामर्श सौ मोकदमा दागि देलकैन्हि सौ तावड़-तोड़ फेरवी करैत-करावैत दीवानजीक सफल संपदा निलाम-मखशालाक होम मख्य एक-एक के स्वाहा कय देलकैन्हि । पश्चाति पूर्णातिविक हेतु बड़का घर सौ दीवानजी बहुरबनो कबलाह तौ स्मराने स्मराने देखि पड़वैन्हि । घर अल्लाह तौ घरणीक सिबाय केजो खोज पुछारी पर्यन्त नहि करैत छैन्हि । एक चुटकी गन्न जे असन करताह से दुष्काय्य भै रहल छैन्हि ।

अमुबची पाठक ! येही ठामक कहाउत चिक्कै ।

सम्पत्ति नरम नमाम कय मुख हेरत अति हीन ।

रजनी सौ त्याजित शक्ती अहहि न सोभा दीन ॥

विवाह दान अनित्य विमुक्त मपन्यजन कारणे उन्नय समधीक स्थिति एक दम्य मुख सौभाग्यक उत्तम शिखर सौ अति दुख-दुर्गतिक अन्ध-मूष मे पतिल भै गेलैन्हि । तीव्र दरिद्रताक आत्मी बसाह, यदि कोसो आत्मीय जनक द्वार पर पर्यटनी करैत छथि तौ ओहिदाम सौ तिरस्कृते मे प्रत्यागत होबक पड़ैत छैन्हि । तमन निरावलम्ब मे स्वभावतिक न्यून श्रेणीक धनवान व्यक्तिक ओहि दाम स्वर्वाभावक सिद्धान्त विवाहक निवेचना करम लगैत छथि । सिद्धान्त विवाहक पूर्व घरि तौ अन्तिम श्रेणीक व्यक्ति विशेष रूपे सेवा सम्मान लरसावैत रहैत छैन्हि किन्तु उत्पत्ती ओहो ओहो श्वासन लगैत छैन्हि तलन पूर्वकृत अनन्य पर आक्रम शिर मुनि-मुनि परचाताप करैत अधोगति तौ जीवन साक्षात् निर्वाह करक पड़ैत छैन्हि ।

उल्लिखकता दान—अवश्यमेव भोक्तव्य काव्यकारित्य युवा सुभन् ॥

खटम परिच्छेद

हिरामन

गमन हमरो नगिजाग ।

करब हम कोत बहारा ॥

पाँच वर्ष पर बाइ बबाहिर बालक हजम पकट आकुर के पुन मनोरथ भावक भवन पर हिरामन देखैत छिड़ैन्हि । हजाम आकुरक पुनरागमक कारण पाठक-पाठिका को चिन्तित भै गेल होवतैन्हि । बहुसालपुर-मायापुरीक गमनागमन सौ टांग लोड़ैत-तोड़ैत पाँच वर्ष मे बाइ अपन अभीष्ट सिद्ध कय रहल छथि । हिरामनक शुभ दिनत अचुके सोलहम दिन सैय मुनि हाथीसो शुभक स्वीकृत कयल गेल छैन्हि । कतोक शिव पाठक तक-धितकक और मे पड़ि गेलाह होएत जे सैतमे हिरामन कोन होवतैक । किन्तु, विचारशील पाठक यदि कमेक औरो विचारयि तौ स्पष्टतया विदित भै अय-

तैल के बहावण भासक कमे बरणि चैन किन्तु तौर्य भासक हिसाबे एखन नैकास भिकैक । असु नवीछक पथ तथा अपन विदाइ-तिराइक सहित पलट आकुर मुलभित होइत बहुलोजपुर पकाटि अगलाह । तिरामनन-दिबन निर्बन भे । पर छोनेनासक बैठ नाथ जनाहिर तान अपन कहल-अनमनाएल भर हारक पुनरोझार (मरम्मति) करायन लगलाह अछि । ओम्हर जाहि दिन सी मुनसिक तिरामननक दिन मानल भेलैन्ह ताहि दिन ती हुनक प्रियतमा गली बिदुषा श्रीवती हितवादिनी देवी प्रतिदिन एकान्त स्थानमे बैसि-बैसि नारी धर्म पर नाना प्रकारक शीघ्र देख लालसि छथीन्ह ।

श्रीमति हितवादिनी देवी-हव, पिय-भारी बहिनपा ! आब ती तो रिवाजय भी रसमुरालय वादति छह । हमरा सब के ती आब तोहर दखेनो दुलंग मे आएल । 'हू ! कत बिछि नूची नारि जवा नाहीं, पराधीन सपने मुख नाहीं ।' यद्यपि तोहर सजे सुमति चिकटु तथापि हमहू ती तोहर लखिने चिकिबीहू ते किछु नारी धर्म पर शीघ्र दैति छिजीहि कान पालि के अग्रक करैत चलह ।

देखत ! हम सब बाबलाल अपना माता-पिताक आलय (गृह) मे रहैत छी अर्थात् बाबलाल हमरा सबक पाणिग्रहण (विवाह) नहि भेल रहैत अछि ताकते धरि हम सब माता-पिता, पिता-पतिवाहनि, भाव-भाउगीक अधीना रहैति छी किन्तु समर्थोचित पर जलज छी लीकनि हमरा सब के दान कय दैत छथि तखन भी हम सब अपन-अपन पतिक अनुचरी नै जाइति छी । हमरा सबक माय-बाप, पिता-पितावाहनि, भाव-भाउछि, हीत-पीत सब परिमित सुख अर्थात् योग्यतानुसार सुख देनिहार बिकाह किन्तु स्वामी अनन्त सुखक वाता होइत छथि, बिबब भरिमे पतिदेव ती बड़ि हितकर पत्नी के आन केओ नहि होइत छैक । पतिक पति ईश्वर चिकवीन्ह किन्तु हमरा सबक ईश्वर पतिमे बिकाह । हमरा सबक कार्यव्य पति सेवाक अतिरिक्त दोसर कोनो वत, तप तथा यज्ञ करय शास्वकार नहि लिसलैन्ह अछि । (पतिदेवको गुरु स्वीणाम्) यनु नमवान ती एतेक धरि निषेध कय गेलाह अछि जे-जे सोभादिनी स्वामीक आज्ञा बिगर कोनो उपवानो वत करथि ती पतिक

आन के क्षीण करैत धर्म-नासिनो होथि । पतिक धर्मधर्म, पाप-पुण्यक बड़भोगक भागिनी पत्नी चिकवीन्ह लक्ष्य अर्द्धाङ्गिनी कहवैत छथि तहिना पत्नीक धर्म तथा पाप कर्मक बड़भासक भागी पतिथो होइत छथि । अपन पति यदि बान्हार, कनाह, कुलप, कोटि, कुकमी, श्रीवी, बहोर, बूज, लंगड़, मुल्ह तथा मुनसिराजो होथि तथापि हुनक अवहेलन तथा अनधर कोनो अवस्था मध्य कदापि नहि करियैन्ह । मनसा, वाचा, कर्मना ती केवल हुनके पिय-मुशुपा करैत रहियैन्ह । जे पत्नी पतिक अपमान अवज्ञाक आचरण करैत छथि ते ऐहि लीकिक मे आजन्म अनन्त वातन्य ती भौचिलहि छथि किन्तु मरणान्तर समलोकहु मे अनेकानेक शेष सहन करक पड़ैत छैन्ह । जे बिनायिनी निज स्वामी के अधिक परपुरुष सी रमय करैत छथि ते ऐहि जन्म मे कुलकलिकिनी, उलूकिनी नै जीवन धरतीत करैत छथि । पारलौकिको मे तब कल्प पर्यन्त तर्क निवासिनी कयलि जाइति छथि । जे रमणी अधिक सुखक हेतु अपन सब कोटि जन्म पर्यन्तक शीघ्र के वातन्य वात मे तिलाज्वालि कय दैति छथि तनिका सति अग्रमाधम अधवाहि अवला संसार मे दीप्तिक के होइति । येहेनि पापीयसी पतिव्रजिनी पत्नी मरणोत्तरहु जहाँ जन्मग्रहण करैत छथि तहँ पतिक मुख ती अचिन्त रहि प्रसन्न-लक्ष्मणकान लहलह-हटि मे निधना नै जाइत छथि । हम स्त्री जाति बिना परिश्रम सहन मे परनमाति शान्ति कय सकैति छी यदि हम सब सकल छल-बुद्ध छीकि केवल पतिव्रत धर्महीक पालन करी । हमरा सबक सर्वोच्छ्रय धर्म-व्रतादिक पालन करय केवल पतिदेवहीक पाद पद्ममे सनसा, वाचा, कर्मना ती प्रेम बाँध पीक । केवल पतिदेवहीक पाद पद्मक सेवम-सुखमे ती सहक अग्रवाति नारि पुरुषति प्रार्थन करैति छथि । स्त्री जाति के सबक प्रेम परित्याग कय केवल पतिदेवहीक प्रेक्ष करय लिखैत अछि, जाहि कारणे पत्नी, पतिव्रता कहवैति अछि । कहह कोनो स्त्री आइधरि पतिव्रता उपरधिक अनिरिक्त पितावना वं पुत्रवता कहोसक अछि ? माता-पिता, भाय-बहिन, बेटा बेटरी, सासु-ससुर, हीत-पीत, भगन-परिवन अर्थात् जहाँ तक वे नैहो सम्बन्धी छथि ते सब स्त्री के पति पिता तरुणिहू (सूर्यहू) ताप भी अधिक तन बलि पड़ैत छथीन्ह । स्त्रीके पति विधोयक समान दुःख दोसर कोनो नहि होइत छैक । पति बिना पत्नीके सब, धन, धाम, पृथ्वी, राज, सम्राज सब लोक समान बूझि पड़ैत छैक ।

पति विद्वान् पत्नी के भोज, रोग समान, भूषण वस्त्र वीक्षण समान, संसार के समानाक समान बोध होइत छैक । स्त्री के निश्चयारि मे पतिक सन सुखदायक वान केओ नहि होइत छैक । बिना कान्तक कामिनी ओहने वृक्ष केहुने जीवक बिना देह, दीपक बिना गेह, अन्धक बिना तरिता, पक्षक बिना पक्षी, मक्षिक बिना फणि, शिवाकर बिना दिन, चन्द्रक बिना कामिनी । ई एग बोधि-विचारि जे स्त्री केवल पतिदेवहीक सेवन-पूजन करैति छथि तिनका ऊपर देखता-गिरार, श्रुति-मुनि सभ जतए सन्तुष्ट रहैत छथीन्ह । "एस्य पत्नी भवेत्सौखी पतिव्रतपरायणा स्वामी सर्वलोकेषु न मुञ्चो न क्षी-पवान् ॥" भारी प्रथं नियमावलीमे श्री साधिका की मुचंती, की बूझा अर्थात् कोनो अवस्था मे हमरा स्त्री आत्मिक हेतु स्वतंत्रता नहि मिलल गेल अछि । आत्मावस्था मे पिताक, युवावस्था मे पतिक, बृद्धापस्था मे पुनक रक्षा मे रखलि गेलहुं अछि । "पिता रक्षति कोमरि, भर्ता रक्षति पौत्रे पुत्राः न स्त्री स्वावाच्यमर्हति" । स्वतंत्र बेला भी हम सब विगडि आइति छी तखन पति पिता तथा मानामह बीन कुल कर्त्तव्य मे जाइत अछि । हम सब स्त्री एक कहबैति छी तखन कहइ रत्न की नगिन्य करवाक इच्छा ककरा नहि होइति छैकि । देखह सोताई तुलसीदास जी कहि गेलाह अछि जे "नहानुष्टि चलि कुटि चित्तारी । जिवि स्वतंत्र होइ विगडहि नारी" ॥ अतएव हमरा सब के पालिक रत्नक रक्षा सर्वथा-अर्थात् करत्तर्ष भीक ले हमरा पतिव्रता स्त्री के पर-पुरुष सौ परदा (ओट) करव परमोक्ति थीक ।

हमरा समक सोभा केवल औन्मय्य सौ नहि होइति अछि । केवल सुन्दरिये मेहलि सी हम सब विशेष पतिप्राणा नहि मे समैति छी । नुस्करता केवल मुखोद्भवलि सौ नहि किन्तु मुखि नौ होइति छैकि । हम सब यदि यत्नतः जे पतिप्राणा मे स्वर्णक अनुपम सुखक अनुभव करय चाही तौ हमरा सब के परमावश्यक थीक जे पतिक धियतया बनि हुनक आज्ञानुवर्तिनी होइ । पति-इच्छाक प्रतिकूल जे कोनो कार्य होइत हो जे विचारियो कय कयमपि कर्त्तव्य नहि थीक । कोधध्वन मे कोनो दुर्बचनक प्रयोग पतिक प्रति नहि करो, अपरापर स्त्री-मण्डली मे बैसि-बैसि पतिका निन्दा वा हेन बचनक मुख-

धरौ नहि छोड़ी । स्वयं सर्वदा प्रत्ये-चित्ता बनलि रही तथा पतिक चित्त के संवत प्रमन्न रखवाक प्रयत्न करैति प्रभुभावाचकार सौ विभूषित तथा पदार्थु और अष्टावगुणक अनोष्टि किया (स्थायी) करैति रही ।

पति यदि स्लेखित वा चित्तित दुर्बल तौ प्रत्येक प्रयत्न तथा विषय सेवा सुशुभा सौ हुनक दुःख चित्ता के निवारण करैतन्ह । जखन पति परदेश अथवा बाहर सौ शोकल-साकल आवाज तौ हुनक स्वागत मत्कार नुपुञ्जु-मेषण तथा मन्द हानक द्वारा करिबैलि । मुखां तथा कर्कशा स्वीवत् हनहन-पटपट-खटपट तथा दुर्बचन कहीति स्वार्थताक प्रमाण नहि करय जानी । जखन पति परदेश वा बाहर जाथ तखन जखन गरीर के विशेष भूषण-वस्त्र सौ विभूषित करव परलवत् (विपद्) थीक । शूङ्गाराभरण धारण करवा तौ केवल पतिहीक प्रीत्यर्थ थीक । स्त्री आत्मिक सर्वोत्कृष्टाधिपति पतिमे होइत छथि, जखन पति प्रस्तुत नहि तखन प्रणय ककर । जे स्त्री पति विविधिनी छथि तनिक जीवन मायाक निर्वाह केवल भस्वरगिता-योगिनी वा ब्रह्मचारिणीमे भै करक पड़ैत छैलि । विधवाक हेतु तौ शान्त्यक आदेश छैन्ह जे ओ स्वतंत्रक धारण करथि । कोनो बाहन पर विचरथि नहि । ऊँच श्राव्या अर्थात् पक्ष, खाटादि पर सयन नहि करथि । काजर-उबटन, अतर-फुलेज, तान्दुलादि अर्थात् औषधजनक कोनो पदार्थक व्यवहार नहि करथि, विरमुनिष्ठ भेति रहथि । रुचिनिधायि एकहाथि अर्थात् एकभुक्त करथि । एकभुक्तमे केवल जवहीक रोही तथा स्वाच्छातिस्वच्छ सुखरस कांजने भीम लगावथि । किन्तु देखह आप नहि तौ हमरा स्त्री जाति के भूषन-वसन-विन्यासक वृद्धा येहन बडि गेल छैह जे बडि नौ बडि जानिक सुख जे दंतक नाम नहि, माथ मे कारी केछक रेश नहि, जखन मे कान्ति रहि, पास मे छिदर नहि, जात मे करानात नहि अर्थात् कम नहिथ नहि, सेहो भूषणा-वस्तुक-कार्यकुंजी, करमेपुझाकी, श्लेष्मेपुझाकी, सण्णैरुम्मा । धर्मोत्तुक्ता क्षमया धरिनी भार्या च शाह-पुण्यवतीह दुर्लभाः । कटारिपु-मन्थपान, कुंसंगति, पति सौ भूषिता, परिश्रमक, कुसमय सयन और परगृहनिवास ।

अष्टावगुण-साहस, चपलता, अनुत्पत्ता, शायर, भय, प्रतिबेकता, कर्षाच, आदाया ।

भिन्नात्मी, सीमागिनी, सुवतीक कण-स्थान बगदवा पर उत्तर रहति छवि । विशेषतर जवन कोनो तीर्थ स्थान, उत्सव स्थान वा वैतर-वीहरक समन्वयमान करक होयत छैन्हि । यहि समय पर यदि अपना नहि को रहतन्हि तो नदीसिबो-पक्षेसिबो ही मात्ति-मात्ति कय सबान के भूषित कय लेतीह । केर ! हमरि स्त्री जाति के स्वर्ण-रीत्यक (मोन-बानोक) कंकण, किकिणि, काका, कण्ठश्रीक स्थान मे कामतुक हथकड़ी, बरकड़ी, नूति-सिकड़ी सौ श्रुतजित कय दैन्हि तो कि एक्को बेरि शरीरो मन्मथगौलीहि ? हमरि विप्रवा ही बीरो मधवाक काज काटय बर्गति छपीन्हि । देखह हुनक छवि छायाक, घटा पर जोनी कवि केहेन बिबाहक कयलैन्हि अछि । "जरीदार शरी मे किहारी कामदार टँधी, बीबी केशवारी के दिखाते मोल छाती को । ननल, जिरखालो कर भूषण सजाती, बोर कज्जल लजाती हैब बीच बरजाती को । बाल अठगाली वज्रवाती लजाती लङ्का, जीवन बजानी में मुटोको बिज बानी को । नांग बिन बिहुर मुहाली पान खाती सुव, कहिबे को रांठ कान काटे अहिवाती को ।"

हमरा नम के तो बहुत अधीनिक आभरण ही शरीरभूषित करतव्य बीक जे आजन्मो अङ्ग पर सौ उत्तरय नहि, सोरो चौराय नहि मकय, डूटबो-कूटबो वा लियबो नहि करय । समय पड़ता पर कैयो चरिथी धरि नहि सकय । अतएव हमरा नम के परमोचित बीक जे बारहो आभरण तथा पोड़ो श्रृङ्गारक स्थान मे बारह विधि सोलहो कला अश्वि धामा, शिला

१. १२ आभरण-१. बेणी (शिररकुल) २. टीका (माङ्ग टीका) ३. वेसरि (नीध)
४. कण्ठश्री (कण्ठसरि) ५. हार (बगदहार) ६. बाबुपन्द (बिबीड)
७. नुडी (बलया) ८. कङ्कण (कयना) ९. मुदिका (अँटी) १०. किकिणी (पोंखेब)
११. नूपुर (परी, नेउर) १२. चिरिया (चिरिया)

३. १६ श्रृङ्गार-अङ्गुलि २. मञ्जन (हना) ३. कमलबसन परिधान ४. आलका (आरति) रञ्जन ५. बिहुर चियास (केशरञ्जन) ६. बिन्दु चियास मांग मे बिन्दु करय ७. लसाठ पर आलक

आल, घातुमान, अशोक-आल, बैलक-आल, पाक-आलक आल, सौ आभरणिता श्री सोलहो श्रृङ्गार स्त्री कला सौ पति के स्वयं कयने रही अश्वि पति के रति-विलास मे सुखवा होय, पति के स्वयं परसि कय भोजन कराबी, पति के निज करकमल सौ लम्बुल (पान) बर्गय करी, पतिक लम्बुल हाथ-भाय कण्ठश्री सौ उपनिषत रही, पति के मुहकण्ठ तथा कायक गठन अक्षय कराबी, पतिक रुचिक अनुसार उत्तम-उत्तम शैलिक शिक्षिता होय, तथा पतिहिक संग लेली, मधुर नगोहर गानक सुशिक्षिता होय, मत्प तथा प्रियम्बदा होय, पतिक शोष के निजमे वृत्ति नहि हो, पतिक कूर वचन पर उदासीन बनति रही, पति के प्रत्येक कार्य मे सुनसी होय, पतिक शोषारोपित कदा पर शोककमला मे जिनय दशिका होय, पतिक अतिरिक्त परपुरवक संग हाथ पर रनवरी घातुमान कदापि नहि करी, गृहगल पतिक विशेष सेवा-सुखवा करी, पतिक सम्पुल प्रमत्तावशी तथा जलजवनलि बनलि रही, पतिक अतिरिक्त नांग-सलुरक वादपचक पुजन आदरपूर्वक करी । आश्रमक प्रत्येक व्यक्ति उद्यान सौ कुर्वहि, प्रायन-कय्या के त्याग करी । परिवारक प्रत्येक व्यक्ति के अशन-पान करय तत्पश्चात् स्वयं आहार करी । सन्तानक विशेष पालन-पोषण करी । अपरक नीक वस्तुक निषिष्टा कदापि नहि करी । स्वयंलुक मयात्मक पर सम्पुष्टा बनलि रही । अपन गृह सर्व वस्तु कोवि-विचारि तथा नामधार्मिनुसार आय सौ व्यव कम्प करी । विपदापदक हेतु जय सञ्जन कयने रही । गृहक वस्तुमात्र के संयम-नियम सौ राखी तथा विविध ध्यानाकृष्ट कयने रही । मधुर तथा प्रिय वचन सौ परिवार तथा दास-दासी के संतुष्ट कयने रही । देखह ! पतिदेवहीक सेवार्चन सौ अङ्गना,

केसरीक तिलक करय ८. चिन्तुक (गान) पर तिल बनाएव ९. हाथ मेरवे मेहदी लगाव १०. शरीराम्बुल अश्वि सुगन्धि लेपन करय ११. भूपडा धारण करय १२. पुष्पमाल धारण करय १३. मुसराग अश्वि पान चियाएव १४. अश्वराम अश्वि शीत खाल करय और १५. अंजन, कज्जल लगाव । १६. सन्तोमरग (मिर्चि) ।

पक्षी के जे-जहाँ फुरल से भिक्षा नारी धर्म पर देल आब अहूँ की उचित धिक् जे अपना मनबोसि के पुरण धर्म पर किछु शिक्षा दीयोनिह ।

संजुभाषिणी—प्रिय ननदे ! हमर ननबोसि ती हलै मे नारी शिक्षक प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण भै अयलह अछि और काव्य मे ती काव्य परीक्षो-त्तीर्ण पासोपशिक्षित भै आएल छथि । हुनका समुच्च मे हम यदि कनेको अपरोप्यो उठाएब ती तुरन्त काव्य छोडल लगताह । “जोड़ि-बीड़ि सो भीनी वहुमोर हो, नुआ छटी ती नहर ओ” तथापि अहाँ सबक आग्रह हो किछु अवश्य कहवैनिह । अहाँ सब सुनैति चहु हमर कथ्य के सुनैति रहब ।

श्रीमती हितवादिनी—छिः छिः छिः ओ ती हमरा सब के कहिन-अमाय होयताह । हमरा लोकनि हुनक सम्मुख कोना होयबैनिह । अन्तवे सुनैति छी जे पाहुन परस मुखर (मुहफट्ट) छथि की सबैत की जाति देखि सकल ती हम सब बेगम भै जाएब ।

श्रीमती संजुभाषिणी—चलू, चलू ! “हाम्य मनोहारि तसौ जनाकाम” । ओ कि आहाँ सबक सन्धान मे विहारल रहताह, कीबरक वर ती कोनहुन बरदे भेल रहैत छथि बरि सम्मुख नहि होयबैनिह ती देशरियो लागि की ती हमरा सबक दुष्टकृत सुनैति रहब ।

एकप्रकारे कारगरिह हास परिहास करैत-करैत समझू जनी कोबर शूक वैहरि पर प्रस्तुत भेलीह । तबनन्तर श्रीमती संजुभाषिणी अजसर भै निकेतनाभ्यन्तर गेलीह और सुमति नायक सोने जाल सौ कह्य जाबलि छथीनिह—ओ पलुता ! अहाँ हो पण्डितक बेटा महापण्डित छी । आहाँ केँ ती किछु उपदेशो देब शूर्व केँ शीघे देलाएब होयत उतापि बिब मनरीक ममत्वे किछु कहैक पवैत अछि । देशदर्शह । हमरि ननदि शूकन अति अवोछा तब, एक जालक खनित जाहिनी लखी थिकीहि सामु मे जाहि सौ कोनो बातक लघोकार्य नहि होइनिह से यत्न करैत रहबैनिह । आहाँ ती विशेषतया वर्णितहि होयब जे-जे पति पक्षी पर प्रेम रखैत छथि अर्थात् पक्षीवत पालन करैत छथि से परतया पत्नी केँ मातृवत् कुञ्जैत छथि । परन्तुवत-पुरुषक

पत्नी यदि कुसो किन्ना फुहरियो रहैति छथीनिह तथापि धर्म विचारि हुनक पति परदाह-निरत कतपि नहि होइत छथीनिह केवल स्वपरिवारे केँ प्रेमपात्री कुञ्जैत छथीनिह । जे पति स्वपत्नी केँ अर्धाङ्गिनी जानि विशेष प्रणय करैत छथीनिह हुनक पतिवो पति केँ प्राणाधिक प्रीति करैति छथीनिह । दाम्पत्यमे कसन परस्पर प्रवाद प्रेम भै जाइत छैक और कुमल-बोड़ी अपन-अपन कर्त्तव्यक पालन करय लवैति छथि तखन हुनक धृष्टि-शुद्ध मनको स्वर्ग सदा भै जाइत छैन्ह । दिनानुदिन सुख-सौभाग्य-सम्पत्तिवासी होयब लवैत छथि । पराया रमणीक कमनीय कान्ति केँ देखि जाहि पुरुषक चित्त बलायमान होइत छैन्ह से नर अधमाधम नरकी भिकाह । जे पुरुष परता पत्नी ती प्रणय प्राप्त करैत छथि अथवा ओकरा मोहजालमे फँसि जाइत छथि तनिक दसा देखैत होयबैनिह जे लोक लोक केँ तिलांजलि दयतन, धन, धाम केँ स्वाहा करैत माना प्रकारक दुःख शोक सन्ताप केँ सहैत डार-डार भीखाटन करैत फिरैत छथि । जाहि तन-धन-धामक द्वारा कर्म कयला नी अनुप्य सकल सुखक लागि स्वर्गलोक प्राप्त करैत अछि ओहि बहुदम्भ वित्त केँ बाराङ्गना वा अन्याय कुकर्म मे प्रवाहित कय माना प्रकारक रोन-शोक-परितापक कुण्ड मे हवन होइत रहैत छथि । जाहि कुल मे जानिनीक आदर सम्मान नहि होइत छैन्ह से कुल श्री मनु भावना कहैत छथि जे ओहि आभाक आहि सौ आयु विनष्ट भै जाइत अछि और जाहि कुलमे भागिनीक भरण पोषण आदर सम्मान विशेष होइत छैन्ह जाहि कुल पर देव गिरि भूमि-पुनि सब सतत् सानुकूल रहैत छथीन्ह । तेँ स्त्री, पिता, भ्राता पति तथा देवरादिक ती परम पूजनीया लोकीह ।

श्रीचन्ति प्रेमयोग्य विनम्रपत्यानु तत्कुलम् ।

न शोचन्ति मायैता बह्वैत तहि सर्वदा ॥

प्रिय न पावहि जेहि भवन आदर अर सन्मान ।

सो निश्चै यदि जात हँ कहैत सगु भगवान ॥

एही अभ्यन्तर मे मन्द-मन्द हँसैत बिहँसैत छह-छह करैत सोनेलालक
सारि हृदयहारिणी उपस्थित भेलौह और बहिनोड केँ डून्वारी सकल सारि सौँ
परिधाय कहय लागल छथीन्ह "ओ पढ़ना ! ओजीक शिक्षा तौ सुनलैन्ह
कनेक हमरो शिक्षा तौ श्रवण मे धारण कय जाय । अहाँक पुरुष जाति केँ
उचित थिकैन्ह जे माता, भगिनी(बहिनो) तथा पुत्रिसेक भेट निरन्तर स्थानमे
कदापि नहि करथि, कियेक तौ इन्द्रियादिक बड़े बलिष्ठ होइति छथि केहेन-
केहेन, बड़का-बड़का वृद्धिमान बलमानों केँ, स्त्रीसि केँ आप धंक मे पटकै दैति
छैन्ह । ओ पढ़ना ! हम परम संवारी मन्दमति स्वीकारैत कहाँ तक अहाँ केँ
पुरुष-शिक्षा पर दीक्षा देब अहाँ तौ स्वयं काव्य मे पिङ्गलाचार्यकेँ बेटा, ज्ञान
मे कामसुमुण्डीक पीछे थिकैन्ह ।

सोने लाल-प्रिये अहाँ सनहि तौ स्वनैतिक प्रशंसा तथा पुरुष जातिक
विन्दा शोकबहि मे विशेष रूप सौँ छोटि गेलह । अस्तु ब्रह्माप्य अहाँक
अनुरोधक फलन अवश्ये करब, किन्तु हमरा अबोध पर अहाँ कनेक दया-वृष्टि
बेने रहब ।

उचितवक्ता दास-प्रिहू अवधे ! अपने सबहि तौ हमरा दुलखस दुप्रमुख
सोनेलाल केँ अपना-अपना शिक्षा दीक्षाक अवसर सौँ लोट-गोट कय छोड़लह
अछि । अहाँ सभक शिक्षा सारिब जखन देबो नहि जानि सकैत छथि तखन
हमर अबोध मानवक गणने कोन ?

राखिय नारि सदापि घर माहीं ।
युवती शरच्च नृपति वस माहीं ॥
विधिहु न नारि हृदय गति जानी ।
सकल कपट अथ अवशुष खानी ॥
नारि विवश नर सकल गुराई ।
नाचहि नर नरकट की ग्राई ॥

तुलसी या जग आइके कोउ न भयो समरस्य ।
एक काव्यन दक कुचन पर को न बलायो हृत्स्य ॥

श्रीमद वरुन कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।

मृगयनी के नयन धर को अस लागु न काहि ॥

अस्तु ! पूर्वोक्त हास परिहास, शिक्षा दीक्षाक निकचरक (व्याख्यानक)
फुलकोनो अटेण्ड कय अर्थात् घर-नारी कर्तव्यकतन्त्र शिक्षाक सम्पूर्ण समग्र
गेष कय सोनेलाल सानुर सौँ सहति अबलाह ।

आइ बँत शुद्धि दावरी चुको आबि बेल । निगत राति मे सोनेलाल अति
शकीर्ण बने अर्थात् सारि कहार एक बेगारक सहित द्विरागमनक हेतु सामुर
आएल छथि । बेहि सरल शकीर्णता पर कतोक हमर हँसोड पाठक पाठिका
केँ विस्मय तथा हँसियो लागैत होयदैनहु जे निनक सिद्धान्त-विवाह ओहन
बूझ-धाम, कम-ठाम सौँ भेलैन्ह, तिनक द्विरागमनक दशा बेहन सूक्ष्म कियैक
होबय लगलैन्ह ।

पाठक ! सहनोपन, बह्नोपन, अन्ध-धुन्ध अपरिमितापञ्चमताक प्रकि-
कनो राजा सौँ रँके होइत छैक । अतएव पूर्वोक्त घटना सौँ हमरा सम केँ
शिक्षा गहन कर्तव्य थीक जे "बीतो ताहि बिसारि दे, आगे की नुधि ते ।
ओ बनि आबे सहन मे ताही मे चित दे ॥" अस्तु ! बेहि उपन्यासक नायिका
श्रीमती सुमति एक उच्च कुल काश्मिनी तथा विशेष बिदुषी चिपकित्ति तै आशा
कयल जाइति अछि जे भविष्य मे ई अपने साराचार बुद्धिमत्ता तथा दूरदर्शिता
सौँ स्वकुल मे एक आदर्श रमणी भै पतिक अछःपतित अवस्था केँ पुनः विभव
काजिनी सवास स्वनाम केँ सार्थक करीतहि ।

"न गूह नृहनी बिना ।

माया स्वहवा दुहितवान विचित्तोदनी भवेत् ।

बलवान इन्द्रिय प्राप्ति विद्यासमपि कर्षयति ॥

आता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होय विचल मन सकल न रोको । जिवि रविमणि दय रविहि विनोकी ॥

कलि काल विहाय किए मनुजा ।

नहि मानत कोउ अनुजा अनुजा ॥

सत्यस्य धरिच्छेदः

“दुर्गेस्मृती हरसि भीतिमशेषं जन्तोः”

पति गृह-प्रवेशान्तर, सवन वधू-श्रीमती सुमति पतिव्रत आश्रयक अग्रपतन देखि-देखि राखिनिवा सेव चिन्तन । जित-जिताने पड़ति तर्क वितर्क कथ्य लागति छवि । हय चिन्तननि । पतिना तुल्य श्रीभार्यक प्रज्जता पूर्व की सुनैत छवीहि किन्तु सन्धति औरक और केसि सुनि रहति छी, हे मा दुर्गे दुर्गति नाशिनी ! दया कर, पुत्रीक दीनाहीनचस्था की गमन कर कृपाकटाक्ष सौ येहेनि सुमति प्रदान कर जे येहि भवनमे हय एक आदर्श सुवर्ती नै निज नाम के सार्वक करैति पतिक दुर्दशा के सुदशामे पुनः परिवर्तित कर सकी ।

रत्नामयी भगवती श्री कालिकाक कृपा सौ विविधतः कालमे अनुभव-शीला श्रीमती सुमति आश्रयक प्रत्येक कार्य के स्वकी सम्प्राप्त्य लगतीहि । कपन कार्यदशता सौ समाज के विमुग्ध करय लागति छवि । हितक कार्य गुणिता पर स्वर्गगीय सहस्रसिनी आलसिनी मूर्ख स्त्री सभ नामा प्रकारक छूट निम्बा तथा व्यङ्ग करैति परम्पर हास्य परिहास्य करय लागति छवीहि ।

विदुषमनि कहैति छवीन्हि अय ! विदुषमनि देखु तो ? हमरा सभस कुल बूढमे आइ धरि येहेनि निर्लेज कलियुगी कुलबधूक आगमन नहि भेल छलैक अछि । किन्तु सोमक सोहाभा की देखैति छियैन्हि ? साधुर वचना अशोचन नहि प्यतीत भेलैन्हि अछि कि बुद्धि-धुरैमियाक कान कटैत धरक काल-धन्यता सभ अपने हाथे सम्भारय लागति छवि । हमरा लोकनि तो साधुर अवलाक जलर १२, १५ वर्ष पर्यन्त गृहक कोनो कार्य मे हस्ताक्षेप धरि नहि कयल । पर आज्ञान छोड़ि दरजम्मा सौ पीचा सौ कहिओ जातो नहि उठाओल । दिनक कोन चर्चा जे अहंराशि सौ पूर्व सौ नहिओ पति के स्वप्नदु मे दर्शन

नहि देने होयबैन्हि किन्तु आद-कालिक बिलासिनी पुत्रधरू सौ छिरायमनक धातौह सौ पतिक मुवाहार भे जाइति छवि । गृह कार्य कारिकाक ती सादे लिखौने अवैत छवि । सामु-सुनुर, देवर-देयादिनी, तनदि-जैघीक उपर हुर-हुलुपतिक ठेकार तथा फर-फरमाइश सौ सौ हुनका सभ के सतत लतबैति रहैति छवीन्हि विशेषतर लक्षण, जखन स्वामी उपाज्जक रहैत छवीन्हि ।

आर्त्तालयक गठन, शरीरक इठन मे ती कोनो उपाधिमे (जिगरीमे) उपलब्ध बनने साधुर अवैति छवि परोपदेश मे ती एम० ए० बयना ओहू सौ एकाध दर्जा (जिगरी) देखिने पास कय अवैत छवि । येहेनि कुआकूनाक तुलना मे हमरा सभस गमन के करल ?

विदुषमनि-अय विदुषमनि ! बताहि भेलहुँ अछि आइ कालिक गडल चिलल स्त्री के स्वयंश करैति ते अहंकि शास्त्र थीक ? सम्प्रति सरबनक समय नहि चिकैक जे अहाँ गान्धे पर बदल रहबैकि । आइ कालिक पुतहुँ सौ पति-भक्ति मे सावित्री आदर मे सत्यभामा, गरिज मे शशकी होइति छवि चूपचाप देखैति वत् नहि ती कतेको गिळु कहबैकि कि सगलै इन्द्रबुद्ध या अहंकारक आदर्शता करय लागति ।

पाठक ! चिन्तुर-बिनासिनीक कचहरी मे कहाँ तक जोशराएल रहब आग ! वधू श्रीमती सुमतिक बुद्धिवाक सूत्र धरने वत् नहि ती अहं ओटहान लौ मे भुतिआय जाएव ।

अस्तु ! आश्रयक सुईका देखि श्रीमती अपन कयसक अवचित्य गहना बुझिया सौ सर्वाङ्ग सौ करार कयल और ओहि पथ के बेचि छोडि कय तीनि चय सुईया एकट्ठा कयलैन्हि । सभ पञ्चासक जिवीत तथा अग्राह्य उपयोगी सामान सातोभरि क निज्जहिनु हेतु एवके ठान कीनि-येसाहि कय राखि लेलैन्हि । स्वामी के मालिक सौ जे किछु बेतन भेटैत छैन्ह ते सभ पूर्वकृत कृपा मे परिशीलन करवय लगतीहि । स्वामी के भोजन-छाजन मालिकहीक बरभार सौ भेटय लागल छैन्ह ।

आधमो खेलन साढ़े तीनजे नहि-नहि सवे तीन गोटाक छेन्हि धबलि जवाहिर ताल, स्वामी, स्वयं तथा जवाहिर लाखक एक वर्ष-तीनिक तनय सुशील ।

श्रीमती सुमतिक सुप्रबन्ध सौ मुख-सम्पदाक उन्नति आब दिन-दोबर, राति-बीबर होबय लागलि छेन्हि । आधमक प्रत्येक कार्या-चिन्तनक सगहि संग श्रीमती सुमति शिशु सुशीलक सेवा मुखूषा लखन-पालन विशेष रूपे कय रहलि छथीन्हि । प्रभात-सन्ध्या समयमे स्वयं सुशील केँ पढ़ैति छथीन्हि । किञ्चित्कालान्तरहि मे वर्षमासा, गणित, दस-पाँच स्तोत्र, सण-सवा सण काण्डवक श्लोक तथा शास्त्र पुराणाविकक विशेष-विशेष उपयोगी उपाख्यानक सारांश स्मरण कराय एक प्राथमिक शिक्षाक पाठशाला मे प्रतिदिन एक मूल्यक संग अध्ययन पढ़ैति छथीन्हि जाहि सौ सुशीलक बुद्धि विकास दिनानुदिन उन्नति कय रहल छेन्हि ।

सौभागिनी श्रीमती सुमतिक कार्यविलक्षणताक कारणे सोनेलालक सौभाग्यता दिनानुदिन लहलहाय लागलि छेन्हि ।

द्वितीय वर्ष मे श्रीमती सुमति पूर्व मन्त्रमुखी खेलक प्रचुर उपजक आय सौ पुनः चारि पाँच बिगहा खेत खरीद कयबैन्हि । प्रतिवर्ष कमशः खेत-पथार खरीदतहि जाइति छथि । एवम्प्रकारे एक पाँच वर्षभ्यन्तर मे पचासौं बिगहा भू-सम्पति उपाजने कयलैन्हि । येही अभ्यन्तरमे भगवती कालिकाक अनुकम्पा सौ सौभागिनी श्रीमती सुमतिक कोड़ (कोर) एक मुन्वर शिशु सौ सौभाग्यमान भै गेलैन्हि । सम्प्रति सुशील बाबूक बयस तीस वर्ष मे पदार्पण करय चाहैत छैन्हि और अबुके दशम दिन प्रवेशिका परीक्षा (इन्ट्रन्स एन्जामिनेशन) देवय गटना बयथीन्हि । परीक्षा-यत्नक प्रत्युत्तर पूर्ण रीति सौ सुशील बाबू दय आएल छथि । परीक्षाक प्रतिफल बुझनाक हेतु श्रीमती सुमति प्रति सप्ताह पाठशाला निरीक्षकक समक्ष पत्रिका पढ़ैति छथि । समवोचित पर परीक्षाक प्रतिफल उकाशित भेलैक । समाचार पत्र (गजेट) देखल गेल सौ प्रवेशिका परीक्षाक प्रथम श्रेणीक उत्तीर्ण विद्यार्थीक नामावलीमे प्रथम नाम सुशीले बाबूक

बुद्धिगल भेल । केवल पासे नहि १५) पन्द्रह वर्षया नास्तिक वृत्तियो सौ सम्मानित कयल गेल छथि । सुशील बाबूक विद्याविकाशक प्रगसा सुनि-सुनि आब तेरक-तेर जाति बर हिनक सिद्धान्त-विवाहार्थ लाजइत होबय लागल छथीन्हि । पञ्चीकार पर पञ्चीकार आवाजाही कय रहल छथीन्हि । किन्तु श्रीमती सुमति देखी प्रण ठनने छथि जे बाबू घरि सुशील बाबू एम० ए० पास नहि करबौन्ह ताबत घरि हुनक सिद्धान्त-विवाह कदापि नहि करौबीन्हि ।

पाठक ! ईश्वरानुग्रह सौ सौभागिनी श्रीमती सुमतिक सुपुत्र सुबोधो आब कनेक-कनेक काका-काकी, दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामीक भाषण करय लगलैन्हि अछि । अपन काका जवाहिरलालक संग भरि दिन इलाक पर एम्बर-ओम्बर ठेढ़ुनिया बँत गुडकल बुरैत छैन्ह । विद्याभिल भेला पर पितीक पीठिक आधय सौ शरधराइत-शरधराइत ठाढ़ो भै जाइत अछि अणहि मे औषडाइ कय ससियो पढ़ैत अछि । तरुआने फन्दत करय लगैत छैन्ह कि लगले काका कोरा कय लैत छथीन्ह । और पीठ केँ शपथपवैत एक लाल मुनमुना हाथ मे धराय चुप-चुप-चुप कहय लगैत छथीन्ह । मुनमुना हाथ मे धरैत सन्तान चुप्पो भै जाइत छैन्ह और मुनमुना केँ मुँह सौ भम्भोरि तेर सौ लेडाय काकाक मुख मे ठुलैत और तोतराइत-तोतराइत कहय लगैत छैन्ह काका मा, काका कोरा, काकाहीरा । लखन विशेष भूल लगैत छैक तखन रकन्ना करैत-करैत काका मा, काका दूध कहय लगैत छैन्ह । कबको कागध पर चढ़ाय आंगन लय अबैत छथीन्ह । दुधपानान्तर पुनः दाखान बिबि ससरव लगैत छैन्ह । एहि समय यदि जननी रोकबाक हेतु पाछाँ-पाछाँ परिग्रामना करैत छथीन्ह सौ अणहि मे छिरिआव लगैत छैन्ह तखन विवस्त्र भै छोड़ि बँत छथीन्ह । पखन अपन भाव सुशील बाबू केँ प्रभात समय मे पढ़ैत देखैत छैन्ह तखन सुबोधो हुनक दू-एक पोथी केँ उकटि-मुकटि एम्बर-ओम्बर देखि मुख सौ भम्भोरैत तेर सौ लेनइयैत भैया, काका हीयाक पाडा-म्यांस करय लगैत छैन्ह । सन्ध्या समय मे सौ पठनाकार मे सुशील बाबूक आगमने सौ पूर्वहि जाय विराजैत छैन्ह और काका-काकी, दादा-दादीक पाठ

पदम-लगेत अछि । पहुँत-पहुँत अकित भै छामहि । पञ्चकु-पर-किमेर मित्रा मे निमान भै आइत अछि । तखन जननी छठम खबति छथीन्ह और एक अन्न पालन पर सुताय दैति छथीन्हि । तखनुक सुतल पुनः प्रजाते काल मे जर्मत छैन्ह ।

जलन सौं शिशु सुबोध सौं धुरधुर चेतन-निरव भाषण कएब अवलोक अछि तखन सौं बीसन ओगल मे रहितहि बहि छैन्ह । समनयक कालक संग जलत सेवाइत-पुसाइत रहैत छैन्ह । जोननक समय पर जखन काला खयदान हेतु वनजव आइत छथीन्ह तौ एम्बर-ओम्बर माफल किरैत छैन्ह । कलक पीतहीला-मुल्हीला पर शिशु नमराव छोड़ि अवबो कयलैन्ह तौ भरि देह धूर-धुलित भेल अवबैन्ह और चञ्चल चित सौं एम्बर-ओम्बर तर्कत हू-नारि कोर मुल मे देलकैन्ह और अवबोसौं पाय पुनः पलायन पर उड़ैत तखन जो काला धर-धर कहय लगैत छथीन्ह कि सरसर कम नसरि जाइत छैन्ह ।

पेहि प्रकारक स्वतन्त्र चित्तुक जेखन-वस्थाक मुलानुभव करैत सोनेलालक परिवार भरिक लोक प्रमुषित देखल जातत अछि ।

माता-पिता तथा भ्राता सुशील बाबूक विशेष प्रयत्न सौं बोड़बहि दिनक अन्यन्तर मे शिशु सुबोध शिला कल्प, आकारण, निशानित, छन्द तथा उच्चारित मे विशेष क्षमता प्राप्ति करय लागल छथीन्ह ।

सौभागिनी श्रीमती सुमति देवी अलौकिक क्षमता सौं हजारोंक असामान्य-उपाजैन कथ निज धति सोनेलाल के दासपुत्रिक खल्ला सौ विमुक्त कराय वाणिज्य-व्यापार पथक प्रदर्शिता भेलीहि साहि व्यापारक प्रसाद श्रीमती सुमति एखन पचासो हजार संपत्तिक अतिथ्यानी भै गेल छथि । चौधवाह दिनमे सुशील बाबू एम० ए० और सुबोध बाबू प्रवेशिका परीक्षा मे सन सौ प्रथम संख्या मे परिश्रोतीण भेलथीन्ह और सुबोध बाबू एक बीस स्वर्णक छात्रपुलियो प्राप्ति कएलथीन्ह । बाह ! होनिहार विश्वासक मुह-मुह पात ।

सौभागिनी श्रीमती सुमति आव सन ईदगा अर्थात् चित्तेष्णा, कामेष्णा तथा पुत्रेष्णा सौं परिपूरित भै सुशील बाबूक सिद्धान्त विवाह तथा समाज सुधार पर

कटिबद्ध भै एक नियमावलीक निर्माण कयलैन्हि अछि और स्वयं प्रतिज्ञाबद्ध भेल छथि जे जे व्यक्ति नियमावलीक अनुसार कार्य करबौन्ह । तनिकहि मोहिदाम सुशील बाबू प्रभृतिक सिद्धान्त विवाह करीथीन्हि । एम्हर सुशील-सुबोध बाबूक नियायिकापक प्रसादा सुनि-सुति हुनकर विवाहार्थ बहुतोक स्वजाति-वर्ग पञ्जीकार पर पञ्जीकार घटक पर घटक, वृत्ती पर वृत्तीक धुरसङ्ग गन्वावय लागल छथीन्हि किन्तु श्रीमती सुमति देवी एतय प्रत्युत्तर दैति छथीन्हि जे-जे विचारवान व्यक्ति हमर नियमावलीक पालन करताह तनिकहि मोहिदाम हम सुशील बाबूक सिद्धान्त-विवाह करयबौन्हि । नियमावली मे बहुतोक बातक सुधार उल्लिखित छैक ।

॥

॥ रघुनाथ झा 'रमब' ॥



कर्ण गोष्ठी

दूरभाष : 334 9371

६/२८, सी० आई० टी० चिल्डिंग

१६, बागमारी लेन, कलकत्ता-७०० ०५४

श्री १०८ चित्रगुप्त पूजनोत्सव

आत्मीय बन्धु,

आदि पुरुष भगवान श्री १०८ चित्रगुप्तक वार्षिक सामूहिक पूजनोत्सव आगामी मंगलवार १२ नवम्बर १९९६ के आयोजित अछि।

प्रातः काल ९ बजे : श्री चित्रगुप्त-पूजन एवं प्रसाद-वितरण

एहि पुनीत अवसर पर स्व० राश बिहारी लाल दास रचित उपन्यास 'सुमति' क नव संस्करणक लोकार्पण मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार सं सम्मानित श्री प्रभास कुमार चौधरीक कर कमल सं होएत।

प्रधान अतिथि रहताह उपन्यासक नवसंस्करण क भूमिकाक लेखक डा० रमानन्द झा 'रमण'।

सम्पूर्ण कार्यक्रम मोहित श्रमजीवी हिन्दी विद्यालयक सभागार, ९३ पारिकेल डांग्रा मेन रोड, कलकत्ता-७०००५४ (फूल बगान चौरस्ता सं पूरब) मे अनुष्ठित होएत।

समारोहक सफलताक हेतु अपनेक उपस्थितिक आकांक्षी छी।

विनीत :

राजनन्दन लाल दास

अध्यक्ष

उपेन्द्रनाथ दास

सचिव